॥ श्रीवीरनाथाय नमः ॥

# श्रीवर्तमान चौवीसी पूजा विधान

लेखक—स्व० पं० वृन्दावनदासजी

संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक :—

दुलीचंद पन्नालाल परवार,

प्रोप्राइटर—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता ।

प्रथम वार १००० प्रति

श्रुत पंचमी १९८५

न्योछावर एक रुपया
रेशमी जिल्द १॥)

# पूजाओंकी सूची।

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः।

काशीनिवासी स्वर्गीय कविवर वृन्दावनकृत।

# वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा।

दोहा—वंदों पाचौं परमगुरु, सुरगुरु बंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परमप्रकाश॥ १॥
चौवीसौं जिनपति नमों, नमों सारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचों पाठ सुखदाय॥ २॥

नामावली स्तोत्र।

जय जिनंद सुखकंद नमस्ते। जय जिनंद जितफंद नमस्ते॥
जय जिनंद वरबोध नमस्ते। जय जिनंद जितक्रोध नमस्ते॥ १॥

पापतापहरइंदु नमस्ते । अर्हंवरनजुतबिंदु नमस्ते ॥
शिष्टाचारविशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उतकृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥
परम धर्म वरशर्म नमस्ते । मर्मभर्मघन धर्म नमस्ते ॥
दृगविशाल वरभाल नमस्ते । हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ॥ ३ ॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते । रिद्धिसिद्धिवरबृद्ध नमस्ते ॥
वीतराग विज्ञान नमस्ते । चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥
स्वच्छगुणांबुधिरत्न नमस्ते । सत्त्वहितंकरयत्न नमस्ते ॥
कुनयकरी मृगराज नमस्ते । मिथ्या खगवर बाज नमस्ते ॥ ५ ॥
भव्यभवोदधितार नमस्ते । शर्मामृतसितसार नमस्ते ॥
दरशज्ञानसुखवीर्य नमस्ते । चतुरानन धरधीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥
हरि हर ब्रह्मा बिष्णु नमस्ते । मोहमर्द मनु जिष्णु नमस्ते ॥
महादान महभोग नमस्ते । महाज्ञान महजोग नमस्ते ॥ ७ ॥

महा उग्र तपसूर नमस्ते । महा मौन गुणभूरि नमस्ते ॥
धरमचक्रि बृषकेतु नमस्ते । भवसमुद्रशतसेतु नमस्ते ॥ ८ ॥
विद्याईस मुनीश नमस्ते । इंद्रादिकनुतशीस नमस्ते ॥
जय रतनत्रयराय नमस्ते । सकल जीवसुखदाय नमस्ते ॥ ९ ॥
अशरनशरनसहाय नमस्ते । भव्यसुपंथलगाय नमस्ते ॥
निराकार साकार नमस्ते । एकानेकअधार नमस्ते ॥ १० ॥
लोकालोकविलोक नमस्ते । त्रिधा सर्वगुनथोक नमस्ते ॥
सल्लदल्लदलमल्ल नमस्ते । कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते ॥ ११ ॥
भुक्तिमुक्तिदातार नमस्ते । उक्तिसुक्ति शृंगार नमस्ते ॥
गुन अनंत भगवंत नमस्ते । जै जै जै जयवंत नमस्ते ॥ १२ ॥

इति पठित्व जिनचरणाग्रे परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

# समुच्चयचतुर्विंशतिजिनपूजा

छंद कवित्त ।

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपास जिनराय ।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजितसुरराय ॥
विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमानपद पुष्प चढ़ाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक ।

चाल द्यानतरायकृत नंदीश्वरद्वीपाष्टककी तथा गरवारागआदि अनेक चालोमें बनता है ।

मुनिमनसम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा ।
भरि कनककटोरी धीर, दीनों धार धरा ॥

चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥
गोशीर कपूर मिलाय, केशररंग भरी।
जिनचरनन देत चढ़ाय, भवआताप हरी ॥चौ० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि०
तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे।
मुकताफलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे ॥ चौ० ॥ ३ ॥
ॐ ह्री श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि० ॥
वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरौं गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि० ॥

मनमोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्राशुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ॥

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुमआगे ।
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै ॥ चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

दशगंध हुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जाँहिं, तुम पद सेवत हों ॥ चौ० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

शुचि पक्क सरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायौ ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायौ ॥ चौ० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

जलफल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोच्च वरों ॥ चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशांतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

## जयमाला

दोहा—श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हितहेत।
गावो गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ॥ १ ॥

छन्द—जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा। शिवमगपरकाशक अरिगननाशक, चौवीसों जिनराज वरा ॥ २ ॥ छंद पद्धरी—जय रिषभ देव रिषिगन नमंत। जय अजित जीत वसुअरि तुरंत। जय संभव भवभय करत चूर। जय अभिनंदन आनंद पूर ॥ ३ ॥ जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल ॥ जय जय सुपास भवपासनाश। जय चन्द चन्दतनद्युतिप्रकाश ॥ ४ ॥ जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत। जय शीतल शीतलगुननिकेत ॥ जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज। जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥५॥ जय विमल विमलपददेनहार। जय जय अनंत गुनगन अपार ॥ जय धर्म धर्म शिवशर्म देत।

जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥ ६ ॥ जय कुंथु कुंथवादिक रखेय। जय अर जिन वसुअरि छय करेय ॥ जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रतसल्लदल्ल ॥ ७ ॥ जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमनाथ वृषचक्रनेम ॥ जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ॥ ८ ॥

घत्तानंद छंद—चौवीस जिनंदा आनँदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी।
तिनपद जुगचन्दा उदय अमन्दा, वासववंदा हितधारी ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
सोरठा—मुक्तिमुक्तिदातार, चौवीसौं जिनराज वर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहैं ॥ १० ॥
इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# श्रीआदिनाथपूजा।

अडिल्ल—परमपूज वृषभेश स्वयंभूदेवजू। पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू। कनकवरणतन तुंग धनुष पनशत तनों। कृपासिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनों ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथ जिन अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

## अष्टक।

हिमवनोद्भव वारि सुधारिकैं। जजत यों गुनबोध उचारिकैं॥
परमभाव सुखोदधि दीजिए। जन्ममृत्युजरा छय कीजिये॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

मलयचंदन दाहनिकंदनं। घसि उभै करमें करि बंदनं॥
जजत हों प्रशमाश्रम दीजिये। तपततापत्रिधा छय कीजिये॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि॥

अमल तंदुल खंडविवर्जितं। सित निशेषहिमामियतर्जितं॥
जजत हों तसु पुंज धरायजी। अखय संपति द्यो जिनरायजी॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनेन्द्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि॥

कमल चंपक केतकि लीजिये। मदनभंजन भेट धरीजिये ॥
परमशील महा सुखदाय हैं। समरसूल निमूल नशाय हैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

सरस मोदनमोदक लीजिये। हरनभूख जिनेश जजीजिये ॥
सकल आकुलअंतकहेतु हैं। अतुल शांतसुधारस देतु हैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधादिरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

निविड मोहमहातम छाईयो। स्वपरभेद न मोहि लखाइयो ॥
हरनकारन दीपक तासके। जजत हों पद केवल भासके ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

अगरचन्दन आदिक लेयकें। परम पावन गंध सुखेयकें ॥
अगनिसंग जरै मिस धूमके। सकल कर्म उड़े यह घूमके ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

सुरस पक्क मनोहर पावने । विविध लै फल पूज रचावने ॥
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये । हमहि मोक्ष महाफल दीजिये ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि ॥

जलफलादि समस्त मिलायकैं । जजत हों पद मंगल गायकें ॥
भगतवत्सल दीनदयालजी । करहु मोहि सुखी लखि हालजी ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

## पंचकल्याणक ।

छंद द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी ।

असित दोज अषाढ़ सुहावनी । गरभमंगलको दिन पावनी ॥
हरि सची पितुमातहिं सेवही । जजत हैं हम श्रीजिनदेवही ॥१॥
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताये श्रीऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

असित चैत सुनौमि सुहाइयो । जनममंगल तादिन पाइयो ॥
हरि महागिरिपै जजियो तबै । हम जजैं पदपंकजको अबै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवमीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं निर्व० ॥ २ ॥

असित नौमि सुचैत धरे सही । तपविशुद्ध सबै समता गही ॥
निज सुधारससों झरलाइयो । हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चैतकृष्णनवमीदिने दीक्षामंगलप्राप्ताय श्रीआदिनाथाय अर्घं निर्वं० ॥ ३ ॥

असित फागुन ग्यारसि सोहनों । परम केवलज्ञान जागो भनों ॥
हरि समूह जजैं तहँ आइकैं । हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यमंगलप्राप्ताय श्री वृषभनाथाय अर्घं ॥ ४ ॥

असित चौदसि माघ विराजई । परम मोक्ष सुमंगल साजई ॥
हरिसमूह जजे कैलाशजी । हम जजैं अति धार हुलासजी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं माघ कृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगल प्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं निर्वं ॥ ५ ॥

जयमाला ।

छंद घत्तानंद ।

जय जय जिनचंदा आदिजिनंदा, हनि भवफंदा कंदा जू ।

वासवशतवंदा धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू ॥ १ ॥

छंद मोतीदाम ।

त्रिलोकहितंकर पूरन पर्म । प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म ॥
जतीसुर ब्रह्मविदांबर बुद्ध । बृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध ॥ २ ॥
जबै गर्भागममंगल जान । तबै हरि हर्ष हिये अति आन ॥
पिताजननीपदसेव करेय । अनेक प्रकार उमंग भरेय ॥ ३ ॥
जन्मे जब ही तब ही हरि आय । गिरेंद्रविषै किय न्हौन सुजाय ॥
नियोग समस्त किये तित सार । सुलाय प्रभू पुनि राज अगार ॥४॥
पिताकर सोंपि कियो तित नाट । अमंद अनंद समेत विराट ॥
सुथानपयान कियो फिर इंद । इहां सुर सेव करैं जिनचंद ॥५॥
कियौ चिरकाल सुखाश्रित राज । प्रजा सब आनँदको तित साज ॥
सुलिप्त सुभोगनिमैं लखि जोग । कियो हरिने यह उत्तम योग ॥६॥

निलंजन नाच रच्यो तुमपास। नवों रसपूरित भाव विलास ॥
बजै मिरदंग द्रमं द्रम जोर। चलै पग झारि झनांझन झोर ॥७॥
घना घन घंट करै धुनि मिष्ट। बजै मुहचंग सुरान्वित पुष्ट ॥
खड़ी छिनपास छिनैही अकाश। लघू छिन दीरघ आदि विलास॥८॥
ततच्छन ताहि विलै अविलोय। भये भवतैं भयभीत बहोय ॥
सुभावत भावन बारह भाय। तहां दिवब्रह्मरिषीश्वर आय॥ ९ ॥
प्रबोध प्रभू सुगये निज धाम। तबै हरि आय रची शिवकाम ॥
कियो कचलौंच पिरागअरन्य। चतुर्थम ज्ञान लह्यो जगधन्य॥१०॥
धर्यो तब योग छमास प्रमान। दियो शिरियंस तिन्हैं इख दान ॥
भयो जब केवलज्ञान जिनेंद। समोस्रृतठाठ रच्यो सु धनेंद ॥११॥
तहां बृषतत्त्व प्रकाशि अमेस। कियो फिर निर्भयथानप्रवेस ॥
अनंत गुनातम श्रीसुखराश। तुमैं नित भव्य नमैं शिवआश॥१२॥

छंद घत्तानंद ।

यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी, जनम जरा मृति दूर करो ।
शिवसंपति दीजे ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद आर्या—जो ऋषभेश्वर पूजै, मनबचतनभाव शुद्ध कर प्रानी ॥
सो पोवै निश्चै सौं, भुक्ति औ मुक्ति सारसुखथानी ॥ १४ ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत । इत्याशीर्वादः

# श्रीअजितनाथपूजा ।

छंद—त्याग वैजयंत सार सारधर्मके अधार, जन्मधार धीर नम्र सुष्ठुकौशलापुरी । अष्ठदुष्टनष्टकार मातु वैजयाकुमार, आयु लक्ष पूर्व दक्ष है बहत्तरैपुरी ॥ ते जिनेश श्री महेश शत्रु के निकंदनेश, अत्र हेरियेसुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी । आय तिष्ट इष्टदेव मैं करों

पदाब्जसेव, पर्मशमदाय पाय आय शर्न आपुरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिन अत्रावतरावतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्नि हितो भव भव वषट् ॥ १ ॥

## अष्टक।

छंद त्रिभंगी अनुप्रासक।

गंगाहृदपानी निर्मल आनी, शौरभसानी सीतानी।
तसु धारत धारा तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी ॥
श्रीअजितजिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

शुचि चंदन बावन तापमिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो।
तुन भवतपभंजनहो शिवरंजन, पूजारंजनमैं आयो ॥ श्री० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥

सितखंडविवर्जित निशिपतितर्जित पुंज, विधर्ज्जित तंदलको ।
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित, आनंदभर्जित दंदलको ॥ श्री० ३॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ॥

मनमथमदमंथन धीरजग्रंथन, ग्रंथनिग्रंथन ग्रंथपती ।
तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ॥ श्री० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो ।
षटरसकर भीने अन्न नवीने पूजन कीने सुख पायो ॥ श्री०॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय चरुं नि० ॥

दीपकमनिमाला जोतउजाला; भरि कनथाला हाथलिया ।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी केवलधारी पूज किया ॥ श्री० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

अगरादिकचूरन परिमलपूरन खेवत क्रूरन कर्म जरै।
दशहूं दिशि धावत हर्ष बढ़ावत अलिगुणगावत नृत्य करै ॥ श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

बादाम नरंगी श्रीफल चंगी आदि अभंगीसौं अरचौं।
सब विघनविनाशै सुखपरकाशै आतम भासै भौविरचौं ॥श्री० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

जलफल सब सज्जे बाजत बज्जै गुनगनरज्जै मनमज्जै।
तुअ पदजुगमज्जे सज्जन जज्जै ते भवभज्जै निजकज्जै ॥ श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामि० ॥ ६ ॥

## पंचकल्याणक।

छंद द्रुतमध्यकं १६ मात्रा।

जेठ असेत अमावशि सो है। गर्भदिना नँद सो मनमोहै ॥
इंद फनिंद जजे मनलाई। हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावास्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ॥ १ ॥

माघसुदी दशमी दिन जाये। त्रिभुवनमें अति हरष बढ़ाये ॥
इंद फनिंद जजैं तित आई। हम नित सेवत हैं हुलशाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ॥ २ ॥

माघसुदी दशमी तप धारा। भव तन भोग अनित्य विचारा ॥
इंद फनिंद जजैं तित आई। हम इत सेवत हैं सिरनाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०॥ ३ ॥

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो। त्रिभुवनभानु सु केवल जायो ॥
इंदफनिंद जजैं तित आई। हम पद पूजत प्रीत लगाई ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्थीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंचमि चैतसुदी निरवाना। निजगुनराज लियो भगवाना ॥
इंदफनिंद जजैं तित आई। हम पद पूजत हैं गुनगाई ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैतशुक्लपञ्चमीदिने निर्वाणमंगलप्राप्ताय श्रीअजितनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

## जयमाला ।

दोहा—अष्ट दुष्टको नष्ट करि इष्टमिष्ट निज पाय ।
शिष्ट धर्मभाख्यो हमें पुष्ट करो जिनराय ॥ १ ॥

छंद पद्धड़ी १६ मात्रा ।

जय अजित देव तुअ गुन अपार । पै कहूं कछुक लघु बुद्धि धार ॥ दशजनमतअतिशय बलअनंत । शुभलच्छन मधुरवचन भनंत ॥ २ ॥ संहनन प्रथम मलरहित देह । तनसौरभ शोणितस्वेत जेह ॥ वपु स्वेदविना महरूपधार । सम चतुर धरें संठान चार ॥ ३ ॥ दश केवल गमनअकाशदेव । सुरभिच्छ रहै योजन सतेव ॥ उपसर्गरहित जिनतन सु होय । सब जीव रहितबाधा सु जोय ॥ ४ ॥ मुखचारि सरबविद्याअधीश । कवलाअहार बर्जित गरीश ॥ छायाविनु नख कच बढ़ै नाहिं । उन्मेष टमक नहिं भ्रुकुटि माहिं ॥ ५ ॥ सुरकृत दशचार करों बखान । सब जीवमित्रता भावजान ॥ कंटकविन दर्पणवत सुभूम । सब धान वृच्छ फल रहै भूम ॥ ६ ॥ पटरितुके फूल फले निहार । दिशि निर्मल जिय आनंदधार ॥ जहँ शीतल मंद सुगंध वाय । पदपंकजतल पंकज रचाय ॥ ७ ॥ मलरहित गगन सुर जय उचार । वरषा गंधोदक होत सार ॥ वर धर्मचक्र आगें चलाय । वसुमंगलजुत यह सुर रचाय ॥८॥

:सिंहासन छत्र चमर सुहात। भामंडलछवि वरनी न जात॥ तरु उच्च अशोक रु सुमनवृष्टि धुनि दिव्य और दुन्दुभी मिष्ट॥ ९॥ दृग ज्ञान शर्म वीरज अनंत। गुण छियालीस इम तुम लहंत॥ इन आदि अनंते सुगुन धार। वरनत गनपति नहिं लहत पार॥ १०॥ तब समवशरनमहँ इंद्र आय। पद पूजत वसुविधि दरब लाय॥ अति भगतिसहित नाटक रचाय॥ ताथेइ थेइ थेइ पुनि रही छाय॥ ११॥ पग नूपुर झननन झनननाय। तनननननन तननन तान गाय॥ घननन नन नन घंटा घनाय। छम छम छम छम घुंघरू बजाय॥१२॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मुरज ध्वान। संसाग्रदि सरंगी सुर भरत तान॥ झट झट झट अटपट नटत नाट। इत्यादि रच्यो अद्भुत सुठाट॥ १३॥ पुनि वंदि इंद थुति नुति करंत। तुम हो जगमें जयवंत संत॥ फिर तुम विहार करि धर्मवृष्टि। सब जोग निरोध्यो परम इष्ट॥१४॥ सम्मेदथकी लिय मुकति थान। जय सिद्धशिरोमन गुननिधान॥ वृन्दावन वंदत बारबार। भवसागरतें मो तार तार॥ १५॥

छंद घत्तानंद।

जय अजित कृपाला गुनमणिमाला, संजमशाला बोधपती।
वर सुजसउजाला हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

छंद मदावलिप्तकपोल ।

जो जन अजित जिनेश जजैं हैं, मनवचकाई ।
ताकों होय आनंद ज्ञान सम्पति सुखदाई ॥
पुत्र मित्र धन्यधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै ।
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसों शिव पावै ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः ।

## श्रीशंभवनाथ पूजा ।

छंद मदावलिप्तकपोल ।

जय शंभव जिनचंद सदा हरिगनचकोरनुत ।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत ॥
तजि ग्रीवक लिये जन्मनगर सावत्री आई ।
सो भवभंजनहेत भगतपर होहु सहाई ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीशंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर । संवौषट् ॥

ॐ ह्रीं श्री शंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥

ॐ ह्री श्रीशंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

## अष्टक ।

छंद चौबोला तथा अनेक रागोमे गाया जाता है ।

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरीमें धारा ।
जनमजरामृतुनाशकरनकों, तुमपदतर ढारों धारा ॥
शंभवजिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निराबाध भविजन पावै ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीशंभवजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥

तपतदाहकों कंदन चंदन मलयागिरिको घसि लायो ।
जगवंदन भौफंदनखंदन समरथ लखि शरनै आयौ ॥ शं० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० ॥

देवजीर सुखदास कमलवासित, सित सुन्दर अनियारे ।
पंज धरों इन चरनन आगें, लहों अखयपदकों प्यारे ॥ शं०॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ॥

कमल केतकी बेल चमेली चंपा, जूही सुमन वरा ।
तासों पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा ॥ शं० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासों पदश्रीपतिको पूजत, छुधारोग ततकाल हना ॥ शं० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

घटपटपरकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों ।
केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों ॥शं०॥६॥

ॐ ह्री श्रीशंभवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

अगरतगर कृसनागर श्रीखंडादिक चूर हुताशनमें ।
खेवत हों तुम चरनजलजढिग, कर्म छार जरि ह्वै छनमें ॥शं०॥७॥

ॐ ह्री श्रीशंभवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि० ॥

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाखर मैं ।
लै फल प्राशुक पूजों तुमपद, देहु अखयपद नाथ हमैं ॥शं०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि० ॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपों भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनिपिया ॥ शं०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

## पञ्चकल्याणक ।

छन्द हंसी मात्रा १५ ।

मातागर्भविषै जिन आय । फागुनसित आठैं सुखदाय ॥

सेयो सुरतिय छप्पन वृन्द । नानाविधि मैं जजों जिनन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

कार्तिक सित पूनम तिथि जान । तीनज्ञानजुत जनम प्रमाण ॥
धरि गिरिराज जजे सुरराज । तिन्हें जजों मैं निजहित काज ॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं निर्वं०॥२॥

मंगसिरसित पून्यों तप धार । सकल सङ्ग तजि जिन अनगार ॥
ध्यानादिक बल जीते कर्म । चर्चों चरन देहु शिवशर्म ॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं ॥३॥

कातिक कलि तिथि चौथ महान । घाति घात लिया केवल ज्ञान ॥
समवशरनमहँ तिष्ठे देव । तुरिय चिह्न चर्चों वसुभेव ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थीदिने ज्ञानसाम्राज्यमंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घ्यं०

चैत शुकल तिथि षष्ठी चोख । गिरसमेदतैं लीनों मोख ॥

चारशतक धनु अवगाहना । जजों तासपद थुतिकर घना ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपष्ठीदिने निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं० ॥ ५ ।

## जयमाला ।

दोहा—श्रीशंभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निजहितकाज ॥ १ ॥

छंद मोतीदाम ।

जिनेश महेश गुणेश गरिष्ट । सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट ॥ धरे वृषचक्र करे अघ चूर । अतत्त्वछपातममर्द्दनसूर ॥ २ ॥ सुतत्त्वप्रकाशन शासन शुद्ध । विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ॥ दयातरुतर्पनमेघ महान । कुनैगिरिगंजन वज्र समान ॥ ३ ॥ सुगर्भरु जन्ममहोत्सवमांहि । जगज्जन आनँदकंद लहाहिं ॥ सुपूरव साठहि लच्छ जु आय । कुमार चतुर्थम अंश रमाय ॥४॥ चवालिस लाख सुपूरव एव । निकंटक राज कियो जिनदेव ॥ तजे कछुकारन पाय सुराज । धरे व्रत संजम आतमकाज ॥ ५ ॥ सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान । धरे वनमें निज आतम ध्यान ॥ कियौ चवघातिय कर्म विनाश । लयो तब

नगर अजोध्या जनम इंद, नागिंद जु ध्यावै।
तिन्हें जजनके हेत थापि, हम मंगल गावैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ॥३॥

## अष्टक।

छन्द गीता, हरिगीता तथा रूपमाला।

पद्मद्रहगत गंगचंग, अभंग धार सुधार है।
कनकमणिगनजड़ित झारी, द्वारधार निकार है ॥
कलुषतापनिकंद श्रीअभिनंद, अनुपम चंद है।
पदवंद बृंद जजे प्रभू, भवदंदफंदनिकंद है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

शीतचंदन कदलिनंदन, सुजलसंग घसायकैं ।

ह्व सुगंध दशोंदिशामैं, भ्रमैं मधुकर आयकैं ॥ क० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि ॥

हीरहिमशशिफेनमुक्ता, सरिस तंदुल सेत हैं ।

तासको ढिग पुंज धारौं, अछयपदके हेत हैं ॥ क० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामि ।

समरसुभटनिघटनकारन, सुमन सुमनसमान हैं ।

सुरभितैं जापैं करै झंकार, मधुकर आन हैं ॥ क० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी ।

छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरचेयजी ॥ क० ॥५॥

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

अततततममर्दनकिरनवर, बोधभानुविकाश है ।
तुम चरनढिग दीपक धरों, मोहि होहु स्वपरप्रकाश हैं ॥क०

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगिनि जराय है ॥
सव करमकाष्ट सुकाष्टमैं मिस, धूमघूम उड़ाय है ॥ क०॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

आॅम निंबु सदा फलादिक, पक्क पावन आनजी ।
मोछफलके हेत पूजौं, जोरिकै जुगपानजी ॥ क० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

अष्टद्रव्य सॅवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ॥क०॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

## पञ्चकल्याणक।

छंद हरिपद।

शुकलछट्ट वयशाखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव।
सिद्धारथमाताके उरमें, करै सची शुचि सेव॥
रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेकप्रकार।
ऐसे गुननिधिकों मैं पूजौं, ध्यावौं वारंबार॥ १॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं॥ १॥

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोकहितकार।
अभिनंदन आनंदकंद तुम, लीन्हौं जगअवतार॥
एक महूरत नरकमांहि हू, पायो सब जिय चैन।
कनकबरन कपि चिह्नधरनपद, जजौं तुमैं दिनरैन॥ २॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं॥ २॥

साढे छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग ।
कछु कारन लखि माघशुकल, द्वादशिकों धारो जोग ॥
षष्ठम नैम समापत करि लिय, इंद्रदत्तघर छीर ।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां दीक्षाकल्याणप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरमदुखदाय ।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय ॥
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीवसुखकंद ।
मोकों भवसागरतैं तारो, जय जय जय अभिनंद ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरसमेदतैं मोख ।
माससकल सुखराश कहे बैशाखशुकल छट चोख ॥

चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगतभाव उमगाय ।
हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि विघनसघन मिट जाय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला

दोहा—तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम ।
कनकबरन अवलौकिकैं, पुनि पुनि करूं प्रणाम ॥ १ ॥

छंद लक्ष्मीधरा ।

सच्चिदानंद सद्‌ज्ञान सद्दर्शनी । सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी ॥
सर्वआनंदकंदा महादेवता । जास पादाब्ज सेवैं सबै देवता ॥ २ ॥
गर्भ औ जन्मनिःकर्मकल्यानमें । सत्त्वको शर्म पूरे सबै थानमें ॥
वंशइक्ष्वाकमें आपु ऐसे भये । ज्यों निशाशर्दमें इंदु स्वच्छै ठये ॥ ३ ॥

लक्ष्मीवती छंद ।

होत वैराग लौकांतसुर बोधियो ।

फेरि शिविकासु चढ़ि गहन निजसोधियो ॥
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो ।
समवसरनादि धनदेव तव निरमयो ॥ ४ ॥
एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी ।
गोल साढेदशै जोजने जलकी ॥
चारदिशपैड़िका वीस हज्जार है ।
रत्नके चूरका कोट निरधार है ॥ ५ ॥
कोट चहुँओर चहुँद्वार तोरन खँचे ।
तास आगे चहूं मानथंभा रचे ॥
मान मानी तजैं जासढिग जायकैं ।
नम्रताधार सेवैं तुम्हैं आयकैं ॥ ६ ॥

छंद लक्ष्मीधरा ।

विंब सिंहासनोंप जहाँ सोहहीं । इंद्रनागेन्द्र केने मनै मोहहीं ।

वापिका वारिसों जत्र सोहै भरीं । जासमें न्हात ही पाप जावै टरी ॥ ७ ॥

तास आगें भरी खातिका वारसों । हंस सूआदि पंखी रमैं प्यारसों ॥

पुष्पकी वाटिका वागवृच्छें जहां । फूल और श्रीफलं सर्वही हैं तहां ॥ ८ ॥

कोट सौवर्णका तास आगें खड़ा । चारदर्वाजचोओर रत्नों जड़ा ॥

चार उद्यान चारोंदिशामें गना । है धुजापंक्ति औ नाटशाला बना । ॥ ९ ॥

तासु आगें त्रितीकोट रूपामयी । तूप नौ जास चारों दिशामें ठयी ॥

धाम सिद्धांतधारीनके हैं जहां । औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहां ॥ १० ॥

तास आगें रची गंधकूटी महां । तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा ॥

एकपैं तौ निधै ही धरी ख्यात हैं । भव्यप्रानी तहां लौं सवैं जात हैं ॥११॥

दूसरी पीठपै चक्रधारी गमै । तीसरे प्रातिहार्यें लशै भागमें ॥

तासपैं वेदिका चार थंभानकी । है बनी सर्वकल्यानके खानकी ॥ १२ ॥

तासपैं है सुसिंघासनं भासनं । जासपै पद्म प्राफुल्ल है आसनं ॥

तासुपैं अंतरीक्षं विराजै सही । तीनछत्रै फिरें शीसरत्नै यही ॥ १३ ॥

पंचमउदधितनों सम उज्जल, जल लीनों वरगंध मिलाय।
कनककटोरीमाहिं धारिकरि, धार देहुं सुचि मनवचकाय॥
हरिहरवंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि॥

मलयागर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर उलाय।
भवतपहरन चरन परवारों, जनमजरामृततापपलाय॥ हरि० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि॥

शशिसमउज्जल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास।
सो लै अखयसंपदाकारन, पुंज धरों, तुमचरननपास॥ हरि० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि॥

कमलकेतुकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय।

सो लै समरशूलछैकारन, जजों चरन अति प्रीत लगाय ॥हरि०॥४॥

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

नव्य गव्य पकवान बनाऊं, सुरस देखि दृगमन ललचाय ।

सो लै छुधारोगछयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय ॥ हरि०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

रतनजड़ित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय ।

दीप धरों तुम चरननआगें, जातैं केवलज्ञान लहाय ॥ हरि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगिनिमें देत जराय ।

अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उड़ाय ॥ हरि० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

श्रीफल मातुलिंग वर दाड़िम, आम निंबु फल प्रासुकलाय ।

मोक्षमहाफल चाखन कारन, पूजत हो तुमरे जुग पाय ॥ हरि०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि ॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।

नाचि राचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ॥ह०९॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

## पंचकल्याणक ।

रूप चौपाई ।

संजयंत तजि गरभ पधारे । सावनसेतदुतिय सुखकारे ॥

रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया । जजों चरन जय जय जिनराया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घं ॥ १ ॥

चैतसुकलग्यारस कहँ जानों । जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानों ॥

मानों धर्यो धरम अवतारा । जजों चरनजुग अष्टप्रकारा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ २ ॥

चैतसुकलग्यारस तिथि भाखा। तादिन तप धरि निजरस चाखा ॥
पारन पद्मसद्म पय कीनों। जजत चरन हम समता भीनों ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चैतशुक्लैकादश्यां तपमङ्गलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

सुकलचैतएकादशि हाने। घाति सकल जे जुगपति जाने ॥
समवसरनमहँ कहि वृषसारं। जजहुं अनंतचतुष्टयधारं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥

चैतसुकलग्यारस निरवानं। गिरिसमेदतैं त्रिभुवनमानं ॥
गुनअनंत निजनिरमलधारी। जजों देव सुधि लेहु हमारी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायार्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला।

सुमति तीनसौ छत्तिसौ, सुमतिभेद दरसाय।

सुमति देहु विनती करों, सुमति विलंब कराय ॥ १ ॥
दयावेलि तहँ सुगुननिधि, भविक-मोद गम चंद ॥
सुमतिस्सतीपति सुमतिकों, ध्यावो धरि आनंद ॥ २ ॥
पंच परावरतन हरन, पंचसुमति सित दैन ॥
पंचलब्धिदातारके, गुन गाऊं दिनरैन ॥ ३ ॥

छंद भुजंगप्रयात।

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा। जपैं नाम जाको सबै दुःख भाजा ॥
महासूर इक्ष्वाकवंशी विराजे। गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजे ॥ ४ ॥
तिन्होंके महापुण्यसों आप जाये। तिहूंलोकमें जीव आनंद पाये ॥
सुनासीर ताही घरी मेरु धायो। क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथा यों ॥
वहुत्तांतकों सोंपि संगीत कीनों। नमें हाथ जोरें भलीभक्ति भीनों ॥
चिताई दशी लाख ही पूर्व वाले। प्रजा लाख उन्नीस ही पूर्व पाले ॥ ६ ॥
कछू हेतुनें भावना वार भाये। तहाँ ब्रह्मलौकांतके देव आये ॥

गये बोधि ताही समैइन्द्र आयो । धरे पालकीमें सु उद्यान ल्यायो ॥ ७ ॥
नमें सिद्धको केशलोंचे सवै ही । धस्यो ध्यान शुद्धं जु घाती हनै ही ।
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं । गणाधीश जु एक सौ सोलराजं ॥ ८ ॥
खिरैं शब्द तामैं छहौं द्रव्य धारे । गुनौपर्जउत्पादव्यैध्रौव्य सारे ॥
तथा कर्म आठों तनी तिस्थि गाजं । मिले जासुके नाशतेंमोच्छराजं ॥
धरैं मौहिनी सत्तरं कोड़कोड़ी । सरित्पत्प्रमाणं थितिं दीर्घ जोड़ी ॥
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अंतरायं । धरैं तीसकोड़ाकुड़ी सिंधुकायं ॥ १० ॥
नथा नाम गोतं कुड़ाकोड़ी वीसं । समुद्रप्रमाणं धरें सत्तईसं ॥
सु तैंतीसअब्धिं धरें आयु अब्धिं । कहें सर्व कर्मोंतनी वृद्धलब्धिं ॥ ११ ॥
जघन्यप्रकारे धरें भेद ये ही । मुहूर्त्तं वसू नामगोतं गने ही ॥
तथा ज्ञानदृग्मोह प्रत्यूह आयं । सुअंतमुहूर्त्तं धरेंथित्ति गायं ॥ १२ ॥
तथा वेदिनी बारहें ही मुहूर्त्तं । धरैं थित्त ऐसें भन्यो न्यायजुत्तं ॥
इन्हैं आदि तत्त्वार्थ भाव्यो अशेसा । लह्यो फेरि निर्वान माहीं प्रवेसा ॥१३॥
अनंतं महंतं सुरंतं सुतंतं ॥ अमंदं अफंदं अनंदं अभंतं ॥
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं । अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं ॥ १४ ॥

अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं। अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं ॥

अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं। अखंडं सुमंडं प्रचंडं तदेकं ॥ १५ ॥

सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं। अनंतं गुनाराम जैवन्त वर्मं ॥

नमैं दास वृंदावनं शर्न आई। सबै दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई ॥ १६ ॥

छंद घत्तानंद।

तुव सुगुन अनंता ध्यावत संता, भ्रमतमभंजनमार्तंडा।

सतमतकरचंडा भवि-कजमंडा, कुमतिकुबल इन गन हंडा ॥१७॥

ॐ ह्रीं सुमतिजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद रोड़क।

सुमतिचरन जो जजै, भविक जन मनवचकाई।

तासु सकलदुखदंद फंद ततछिन छय जाई ॥

पुत्रमित्र धन धान्य, शर्म अनुपम सो पावै ॥

बृन्दावन निर्वान, लहै जो निहचै ध्यावै ॥ १८ ॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षपेत।

# पद्मप्रभजिनपूजा ।

छंद रोड़क ( मदावलिप्तकपोल ) ।

पद्‌मरागमनिवरनधरन, तनतुंग अढ़ाई ।
शतक दंड अघखंड, सकल सुर सेवत आई ॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन ।
पद्‌मचरन धरि राग सु थापो इतकरि वंदन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

## अष्टक ।

चाल होलीकी—ताल जत्त ।

पूजों भावसों, श्रीपद्‌मनाथपद सार, पूजों भावसों ॥ टेक ॥

गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ॥
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपद्मनाथपद सार, पूजों भावसों॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

मलयागर कपूर चंदन घँसि, केशररंग मिलाय।
भवतपहरन चरनपर वारो, मिथ्याताप मिटाय ॥ पू० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि ॥

तंदुल उज्जल गंधअनीजुत, कनकथार भर लाय।
पुंज धरों तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपद दाय ॥ पू० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ॥

पारिजात मंदार कलपतरुजनित, सुमन शुचि लाय।
समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद पद्म चढ़ाय ॥पू०॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि भाय।
छुधारोगनिर्नाशन कारन, जजों हरष उर लाय ॥ पू० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम ॥पू० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागर मलयागर चंदन, चूर सुगंध बनाय।
अगिनिमाहिं जारों तुम आगें, अष्टकरम जरि जाय ॥पू०७॥ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार ॥पू० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि ॥

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय॥पू०।६
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामि ॥

## पञ्चकल्याणक।

छंद द्रुतविलंवित तथा सुन्दरि ( मात्रा १६ )।

असित माग सु छट्ट बखानिये। गरभमंगल तादिन मानिये ॥
उरधग्रीवकसौं चय राजजी। जजत इंद्र जजैं हम आजजी ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भावतरणमङ्गलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥
सुकलकातिकतेरसकों जये। त्रिजगजीव सु आनँदकों लये ॥
नगर स्वर्गसमान कुसंबिका। जजतु हैं हरिसंजुत अंबिका ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥
सुकलतेरसकातिक भावनी। तप धर्‍यो वनषष्टम पावनी ॥

करत आतमध्यान धुरंधरो। जजत हैं हम पाप सबै हरो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रमणकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं

सुकलपूनमचैत सुहावनी। परमकेवल सो दिन पावनी ॥

सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ। हम जजैं पदपंकजको इहाँ ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

असित फागुन चौथ सुजानियो। सकलकर्ममहारिपु हानियो ॥

गिरिसमेदथकी शिवको गये। हम जजैं पद ध्यानविषैं लये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थीदिने मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला।

छंद घत्तानंद।

जय पद्मजिनेशा शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा।

जय भवतमभंजन मुनिमनकंजन,—रंजनको दिवसाधेशा॥ १ ॥

छंद रूपचौपाई।

जय जय जिन भविजनहितकारी। जय जय जिन भवसागरतारी ॥ जय जय समवसरन धनधारी। जय जय वीतराग हितकारी ॥ २ ॥ जय तुम साततत्व विधि भाख्यौ। जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ ॥ जय षटद्रव्यपंच जुत काया। जय सबभेद सहित दरशाया ॥ ३ ॥ जय गुनथान जीव परमानो। जय पहिले अनंत जिय जानो ॥ जय दूजे शासादनमाही। तेरहकोड़ि जीवथित आंहीं ॥ ४ ॥ जय तीजे मिश्रितगुणथाने। जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने॥ जय चौथे अविरति गुन जीवा। चारअधिक शतकोड़ि सदीवा ॥ ५ ॥ जय जिय देशवरतमें शेषा। कोड़ि सातसौ हैं थिति वेशा ॥ जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु। पांच तीन नव पांच जीव लखु ॥६॥ जय जय अपरमत्तगुन कोरं। लच्छ छानवै सहस बहोरं ॥ निन्यानवे एकशत तीना। ऐते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥७॥ जय जय अष्टममें दुइ धारा। आठशतक सत्तानों सारा ॥ उपशममें दुइसो निन्यानों। छपकमाहिं तसु दूने जानों ॥८॥ जय इतने २ हितकारी। नवें दशें जुगश्रेणी धारी ॥ जय ग्यारें उपशममगगामी। दुइसैं निन्यानों अध आमी ॥९॥ जय जय छीनमोह गुनथानों। मुनिशतपांचअधिक अट्ठानों ॥ जय जय तेरहमें अरहंता। जुग नभ पन वसु नव वसु तंता ॥१०॥ एते राजतु हैं चतुरानन। हम वंदे पद थुतिकरि आनन ॥ हैं अजोग गुनमें जे देवा। पनसोठानों करों सुसेवा ॥११॥ तित तिथि अइउऋलृ

लघु भापत । करि थिति फिर शिवआनँद चाखत । ए उतकृष्ट सकलगुण थानी । तथा जघन मध्यम जे प्रानी ॥१२॥ तीनो लोकसदनके वासी । निज गुनपरजभेदमय राशी ॥ तथा और द्रव्यनके जेते । गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥१३॥ तीनों कालनते जु अनंता । सो तुम जानत जुगणत संता ॥ सोई दिव्यवचनके द्वारे । दै उपदेश भवकि उद्धारे ॥१४॥ फेरि अचलथल-वासा कीनों । गुन अनंत निजआनँदभीनों ॥ चमरदेहतें किंचित ऊनो । नरआकृति तित हैं नित गूनो ॥१५॥ जय जय सिद्धदेव हितकारी । बार बार यह अरज हमारी ॥ मोकों दुख-सागरतें । काढ़ो वृंदावन जाँचतु हैं ठाढ़ो ॥१६॥

छंद घत्ता ।

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परमसुमतिपद्माधारी ॥
जय जनहितकारी दयाविचारी, जय जय जिनवर अधिकारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद रोड़क ।

जजत पद्मपद्मसद्म ताके सुपद्म अत ।
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनंदकंद शत ॥

लहत स्वर्गपदराज, तहाँतें चय इत आई।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई॥ ८॥

इत्याशीर्वाद।

इतिश्रीपद्मप्रभजिन पूजा समाप्त।

# सुपार्श्वनाथजिनपूजा।

छंद हरिगीता तथा गीता।

जय जय जिनिंद गनिंद इंद, नरिंद गुन चिंतन करै।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनँद भरै॥
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ठ शिष्ठ पृथी प्रिया।
तिन नंदके पद वंद वृंद, अमंद थापत जुतक्रिया॥ १॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्॥ १॥
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः॥ २॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव। वषट् ॥ ३ ॥

चाल द्यानतरायजीकृत सोलहकारणभाषाष्टककी।

तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ॥
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ॥

उज्जल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ॥ तुम० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

मलयागरचंदन घँसि सार, लीनो भवतपभंजनहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति ॥ २ ॥

देवजीर सुखदास अखंड। उज्जल जलछालित सित मंड ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति ॥ ३ ॥

प्रासुक सुमन सुगंधित सार । गुंजत अलि मकरध्वजहार ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

छुधाहरन नेवज वर लाय । हरों वेदनी तुम्हें चढ़ाय ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविध्वंसनाय चरुं निर्वपामीति ॥ ५ ॥

ज्वलित दीप भरकरि नवनीत । तुमढिग धारतु हों जगमीत ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविधि गंध हुताशनमाहिं । खेवत क्रूर करम जरि जाहिं ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति ॥७॥

श्रीफल केला आदि अनूप । लै तुम अग्र धरों शिवमूप ॥

दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व पामीति ॥८॥

आठों दरबसाजि गुनगाय । नाचत राचत भगति बढ़ाय ॥

दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधिहो ॥ तुम० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व पामीति ॥९॥

## पञ्चकल्याणक ।

छंद द्रुतिविलंवित तथा सुन्दरी ( वर्ण १२ ) ।

सुकलभादवछट्ठ सुजानिये । गरभमंगल तादिन मानिये ॥

करत सेव सची रचि मातकी । अरघलेय जजों वसुभांतिकी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठिदिने गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥

सुकलजेठदुवादशि जन्मये । सकल जीव सु आनँद तन्मये ॥

त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी । हम जजैं पद मंगल साजजी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥२॥

जनमके तिथ श्रीधरनें धरी। तप समस्त प्रमादनकों हरी॥
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों। हम जजैं इन श्रीपद चावसों॥ ३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां निःक्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥३॥

भ्रमरफागुनछट्ठ सुहावनों। परमकेवलज्ञान लहावनों॥
समवसर्नविषैं वृष भाखियो। हम जजैं पद आनंद चाखियो॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठिदिने ज्ञानसाम्राज्यपदप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥४॥

असितफागुणसाँतयै पावनों। सकलकर्म कियो छय भावनों।
गिरिसमेदथकी शिव जातु हैं। जजत ही सब विघ्न विलातु हैं॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तमीदिने मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥५॥

## जयमाला।

दोहा—तुंग अंग धनु दोयसो, शोभा सागरचंद।

मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपास सुखकंद ॥ १ ॥

छंद कामिनीमोहन ( २० मात्रा । )

जाति जिनराज शिवराजहितहेत हो। परमवैरागआनंद भरि देत हौ ॥ गर्भके पूर्व षटमास धनदेवने। नगर निरमाशि बाराणसी सेवने ॥ २ ॥ गगनसों रतनकी धार बहु वरपहीं। कोड़ि त्रै अर्द्ध त्रै वार सब हरषहीं ॥ तातके सदन गुनवदन रचना रची। मातुकी सर्वविधि करत सेवा सची ॥ ३ ॥ भयो जब जनम तब इंद्रआसन चल्यों। होय चक्रित तुरित अवधितैं लखि भल्यो। सप्त पग जाय शिर नाय वन्दन करी। चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि घरी ॥ ४ ॥ सातविधि सैन गज वृषभ रथ वाज लै। गन्धरव निरतकारी सबै साज लै ॥ गलितमदगन्ड ऐरावती साजियो। लच्छजोजन सु तन वदन सत राजियो ॥ ५ ॥ वदन वसुदन्त प्रतिदन्त सरवर भरे। तासुमधि शतकपनवीस कमलिनी खरे ॥ कमलनी मध्य पनवीस फूले कमल। कमलप्रति कमलमहँ एकसौ आठदल ॥ ६ ॥ सर्वदल कोड़शतवीस परमान जू। तासुपर अपछरा नचहिं जुतमान जू ॥ तततता तततता वितततता ताथई। धृगतता धृगतता धृगततामें लई ॥ ७ ॥ धरत पग छनन नन सनन नन गगनमें। नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमे। केइ तित वजत बाजे मधुर पगनमे ॥ ८ ॥

केइ द्रुम द्रुम सुद्रुम द्रुम मृदंगनि धुनै। केइ झल्लरि झनन झंझनन झंझनै॥ केइ संसागृदि संसागृदि सारांगि सुर। केई वीनापटह वंसि बाजै मधुर॥ ९॥ केइ तनननन तनननन तानै पुरैं। शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरै॥ केइ झुकि झुकि फिरै चक्रसी भानमी। धृगततां ध्रुगतगत परम शोभा बनी॥ १०॥ केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु। धरत वैक्रियकपरभावसों तन सुभगु॥ केइ करताल करलालतलमें धुनै। तत वितत घन सुखरि जात बाजै मुनै॥ ११॥ इन्हें आदिक सकल साज सँग धारिकैं। आय पुर तीन फेरी करी प्यारकैं॥ सचिय तबजाय परसूतथल मोदमें। मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें॥ १२॥ आनगिरवाननाथहिं दियो हाथमे। छत्र अर चमर वर हरि करत माथमे॥ चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो। जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो॥ १३॥ लेय पंचमउदधिउदक करकर सुरनि। सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि॥ नहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबैं। अघघ घघ घघघघघ भभभभ भभ भौ तबैं॥ १४॥ धधध धध धधधध धध धुनि मधुर होत है। भव्यजनहंसके हरश उद्योत है॥ भये इमि न्हौन तब सकल गुन रंगमें। पोंछि शृंगार कीनों सची अंगमें॥ १५॥ आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो। बालवय तरुन लहि राजसुख भोगयो॥ भोग तज जोग गहि चार अरिकों हने। धारि केवल परम-धरम दुइविधि भने॥ १६॥ नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये। ज्ञानदृगशर्मवीरजअनंते

लये ॥ सो जगतराज यह अरज उर धारियो । धरमके नंदको भवउदधि तारियो ॥ १७ ॥

छंद घत्तानंद ।

जय करुनाधारी शिवहितकारी, तारनतरनजिहाजा हो ।
सेवक नित बंदै मनआनंदै, भवभयमेटनकाजा हो ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—श्रीसुपार्श्व पदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनँद ठाठ ॥ १९ ॥

इत्याशीर्वादाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीचन्द्रप्रभजिनपूजा ।

छप्पय—अनौष्ठ्य जमकालंकार तथा शब्दालंकार शान्तरस ।

चारुचरन आचरन, चरन चितहरनचिहनचर ।
चंदचंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥

चतुक चंड चकचूरि, चारि चिद्‌चक्र गुनाकर ।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रचि रुचि ॥ १ ॥

दोहा—धनुष डेढसौ तुंग तन, महासेन नृपनंद ।
मातुलछना उर जये, थापों चंदजिनंद ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवोषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

## अष्टक ।

चाल द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टककी अष्टपदी तथा होलीकी तालमें, तथा गरभा आदि अनेक चालोमे ।

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनमजरा॥
श्रीचंदनाथदुति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै॥ १॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥ १ ॥

श्रीखंडकपूर सुचंग, केशररंग भरी।
घँसि प्रासुकजलके संग भवआतप हरी॥ श्री०॥ २॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ॥ २ ॥

तंदुल सित सोमसमान, सम लय अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे॥ श्री०॥ ३॥
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधिन अलि आवै।

तासों पद पूजन चंग, कामविथा जावै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय वामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नेवज नानापरकार, इंद्रियबलकारी ।

सो लै पद पूजों सार, आकुलताहारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

तमभंजन दीप सँवार, तुमढिग धारतु हों ।

मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हों ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दशगंधहुतासनमाहिं हे प्रभु खेवतु हौं ।

मम करम दुष्ट जरि जाँहि, यातैं सेवतु हौं ॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुनगावतु हौं ।

पूजों तनमन हरषाय, विघन नशावतु हौं ॥ श्री० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनी गमों ॥ श्री० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

## पंचकल्याणक ।

छंद तोटक ( वर्ण १२ ) ।

कलि पंचमचैत सुहात अली । गरभागममंगल मोद भली ॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता । हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपञ्चम्यां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति ॥ १ ॥

कलि पौषइकादशि जन्म लयो । तब लोकविषै सुखथोक भयो ॥
सुरईश जजैं गिरशीश तबै । हम पूजत हैं नुतशीस अबै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥ २ ॥

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा । कलिपौष इग्यारसि पर्व वरा ॥

निजध्यानंविषै लवलीन भये। धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥३॥

कर केवलभानु उद्योत कियो। तिहुं लोकतणों भ्रम मेट दियो ॥
कलिफाल्गुणसप्तमी इन्द्र जजे ॥ हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥

सित फाल्गुण सप्तमि मुक्ति गये ॥ गुणवंत अनंत अबाध भये ॥
हरि आय जजें तित मोदधरे ॥ हम पूजत ही सब पाप हरे ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला।

दोहा—हे मृगांकअंकितचरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥ १ ॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय।

तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ॥ २ ॥

छंद पद्धरि ( १६ मात्रा । )

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान । भवकानन हानन दवप्रमान ॥ जय गरभजनममंगल दिनंद । भवि जीवविकाशन शर्मकंद ॥ ३ ॥ दशलक्षपूर्वकी आयु पाय । मनवांछित सुख भोगे जिनाय ॥ लखि कारण ह्वै जगतैं उदास । चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥ ४ ॥ तित लौकांतिक बोध्यो नियोग । हरि शिविका सजि धरियो अभोग ॥ तापै तुम चढ़ि जिनचंदराय ताछिनकी शोभाको कहाय ॥५॥ जिन अंग सेत सित चमर ढार । सित छत्र शीस गलगुल-कहार ॥ सित रतनजड़ित भूषण विचित्र । सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र ॥ ६ ॥ सित तन द्युति नाकाधीश आप सित शिवका कांधे धरि सुचाप ॥ सित सुजस सुरेश नरेश सर्व । सित चितमें चिन्तत जात पर्व ॥ ७ ॥ सित चंदनगरतैं निकसि नाथ । सित बनमे पहुंचे सकलसाथ ॥ सितशिलाशिरोमणि स्वच्छछांह । सित तप तित धारयो तुम जिनाह ॥ सित पयको पारण परमसार सित चंद्रदत्त दीनो उदार ॥ सित करमें सो पयधार देत । मानो बांधत भवसिन्धुसेत ॥ ६ ॥ मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ । तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ॥ फिर जाय गहन सित तपकरंत । सित केवलज्योति जग्यो अनंत ॥ लहि समवस-

रणरचना महान। जाके देखत सब पापहान ॥ जहँ तरु अशोक शोभै उतंग । सब शोकतनो चूरै प्रसंग ॥ ११ ॥ सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात। मनु मन्मथ तज हथियार जात ॥ बानी जिन मुखसौं खिरत सार । मनुतत्वप्रकाशन मुकुर धार ॥ १२ ॥ जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरत। मनु सुजस मेघभरि लगिय तंत ॥ सिंहासन है जहँ कमलजुक्त। मनु शिवसर-वरको कमलशुक्त ॥ १३ ॥ दुंदभि जित बाजत मधुर सार। मनु करमजीतको है नगार ॥ सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण। मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥ १४ ॥ तन प्रभातनों मंडल सुहात। भवि देखत निजभव सात सात मनुदर्पणद्युति यह जगमगाय। भविजन भव मुख देखत सुआय ॥ १५ ॥ इत्यादि विभूति अनेक जान बाहिज दीसत महिमा महान ॥ ताको वरणत नहिं लहत पार। तौ अन्तरंगको कहै सार ॥ १६ ॥ अनअंत गुणनिजुत करि विहार। धरमोपदेश दे भव्य तार ॥ फिर जोगनिरोधि अघाति हानि। सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ॥ १७ ॥ वृन्दावन वन्दत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय ॥ तातैंका कहौं सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार ॥ १८ ॥

छंद घत्तानंद ।

जय चंदजिनंदा आनँदकंदा, भवभयभंजन राजै है ॥
रागादिकद्वंदा हरि सब फंदा, मुकतिमांहि थिति साजै हैं ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद चौबोला ।

आटों द्रव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं ॥
ताके भवभवके अघ भाजैं, मुक्तासारसुख ताहि सजैं ॥२०॥
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं ।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ॥२१॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीपुष्पदन्तजिनपूजा ।

छंद मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क ( मात्रा २४ ) ।

पुष्पदंत भगवंत संत सुजपंत तंत गुन ।
महिमावंत महंत कंत शिवतियरमंत मुन ॥
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीव रमासुत ।

स्वेतवरन मनहरन तुम्हैं थापों त्रिवार नुत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव ॥ वषट् ॥

चाल होली, ताल जत्त ।

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी ॥ टेक ॥

हिमवनगिरिगतगंगाजलभर, कंचनभृंग भराय ।
करमकलंक निवारनकारन, जजों, तुम्हारे पाय ॥मेरी० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

बावन चंदन कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसाय ।
चरचों चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय ॥ मेरी० ॥ २ ॥

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय ।

ताको पुंज धरों चरननढिग, देहु अखयपद राय ॥ मेरी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुंजतअलिगन आय ।
ब्रह्मपुत्रमद्भंजनकारन, जजों तुम्हारे पाय ॥ मेरी० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवरबावर फेनी गोंभा, मोदन मोदक लाय ।
छुधावेदनीरोगहरनको, भेंट धरों गुणगाय ॥ मेरी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय ॥मेरी०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६॥

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हौं गुन गाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम घूम सु उड़ाय ॥ मेरी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीती स्वाहा ॥७॥

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट, दाड़िम आम मँगाय।
तासों तुमपदपद्म जजत हौं, विघनसघन मिट जाय ॥मेरी०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय ॥
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥मेरी०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पञ्चकल्याणक।

छंद स्वयंभु ( मात्रा ३२ )।

नवमीतिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहिं थितिदेवाजी।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तितसेवाजी ॥
रतननकी धारा परमउदारा, पर्यो व्योमतैं साराजी ॥

मैं पूजों ध्यावौं भगतिवढ़ावौं, करो मोहि भवपाराजी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥

मँगसिर सितपच्छं तरिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथाजी।
तव ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथाजी ॥
सुरगिरनहवाये, मंगलगाये, पूजे प्रीति लगाईजी।
मैं पूजों ध्यावौं भगतवढावौं, निजनिधिहेत सहाईजी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

सित मँगसिरमासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धारा जी।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकाराजी ॥
सुरमित्र सुदानीके घरआनी; गो-पय-पारन कीना है।
तिनको मैं वन्दौं पापनिकंदौं, जो समतारसभीना है ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि तपमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

सितकातिक गाये दोइज घाये, घातिकरम परचंडाजी ।
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकल सारसुख मंडाजी ॥
गनराज अठासी आनँदभासी, समवसरणवृषदाता जी ।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगताताजी ॥४॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥
आसिन सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाना जी ।
गुन अष्टप्रकारा अनुपमधारा, जै जै कृपानिधानाजी ॥
तित इंद्र सु आयौ पूज रचायौ, चिन्ह तहां करि दीना है ।
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसौं, तुमरे रसमें भीना है ॥५॥
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला

दोहा—लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शतएक ॥

सुरनरवंदित मुकतपति, नमों तुम्हें शिरटेक ॥ १ ॥
पुहुपरदन गुनवदन है, सागरतोयसमान ॥
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ॥ २ ॥

छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी मात्रा ( मात्रा १६ )

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते । पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते ॥ ज्ञानध्यानअमलान नमस्ते । चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ॥ ३ ॥ भवभयभंजन देव नमस्ते मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ॥ मिथ्यानिशिदिनइंद्र नमस्ते । ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते ॥ ४ ॥ भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते । रागदोषमदहंद नमस्ते ॥ विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते ॥ धर्मसुधारसपूर नमस्ते ॥ ५ ॥ केवल ब्रह्मप्रकाश नमस्ते । सकल चराचरभास नमस्ते ॥ विघ्नमहीधरविज्जु नमस्ते । जय ऊरधगतिरिज्जु नमरते ॥ ६ ॥ जय मकराकृतपाद नमस्ते । मकरध्वजमदवाद नमस्ते ॥ कर्मभर्मपरिहार नमस्ते । जय जय अधमउधार नमस्ते ॥ ७ ॥ दयाधुरंधर धीर नमस्ते । जय जय गुनगंभीर नमस्ते ॥ मुक्तिरमनिपति वीर नमस्ते । हरता भवभयपीर नमस्ते ॥ ८ ॥ व्ययउतपतिथितिधार नमस्ते । निजअधार अविकार नमस्ते ॥ भव्यभवोदधितार नमस्ते । वृन्दावननिसतार नमस्ते ॥ ९ ॥

घत्ता छंद ( मात्रा ३२ )।

जय जय जिनदेवं हरिकृतसेवं, परमधरमधनधारी जी ॥
मैं पूजौं ध्यावौं गुनगन गावौं, मेटो विथा हमारी जी ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद मदावलिप्तकपोल।

पुहुपदंतपद संत, जजैजोमन बचकाई ।
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई ॥
सो पावै सुख सर्व, इंद अहिमिंद तनों वर ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै निहचै प्रमोदधर ॥ ११ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

# श्रीशीतलनाथ जिनपूजा ।

छंद मत्तमातंग तथा मत्तगयंद। ( वर्ण २३ )

शीतलनाथ नमो धरि हाथ, सुमाथ जिन्हों भवगाथ मिटाये ।
अच्युततैं च्युत मातसुनंदके,नंद भये पुरभद्दल भाये ॥
वंश इख्वाक कियौ जिनभूषित, भव्यनको भवपार लगाये ।
ऐसे कृपानिधिके पदपंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

## अष्टक ।

छंद वसंततिलका ( वर्ण १४ ) ।

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ ।
भृंगार हेमभरि भक्ति हिये बढ़ायौ ॥
रागादिदोषमलमर्द्दनहेतु येवा ।

चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीखंडसार वर कुंकुम गारि लीनों ।

कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ॥ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं ।

धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजैं ॥ रा० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

श्रीकेतकीप्रमुखपुष्प अदोष लायौ ।

नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायौ ॥ रा० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नैवेद्य सार चरु चारु सँवारि लायौ ।

जांबूनदप्रभृतिभाजन शीस नायौ ॥ रा० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

स्नेहप्रपूरित सुदीपत जोति राजै ।

स्नेहप्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ॥ रा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागुरुप्रमुखगंध हुताशमाहीं ।

खेवों तवाग्र वसुकर्म जरंत जाहीं ॥ रा० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा ।

सौवर्ण गंध फलसार सुपक्व प्यारा ॥ रा० ॥ ८ ॥

ॐ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

कंश्रीफलादि वसु प्रासुकद्रव्य साजे ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ॥ रा० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

छंद इंद्रवज्रा तथा उपेंद्रवज्रा (वर्ण ११)

आठैं वदी चैत सुसुगर्भमाहीं । आये प्रभू मंगलरूप थाहीं ।
सेवे सची मातु अनेक भेवा । चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥

श्रीमाघकी द्वादशी श्याम जायो । भूलोकमें मंगलसार आयो ॥
शैलेन्द्रपे इन्द्र फनिन्द्र जज्जे । मैं ध्यानधारों भवदुःख भज्जे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ २ ॥

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जानों । वैराग्य पायो भवभाव हानों ॥
ध्यायो चिदानंद निवार मोहा । चर्चों सदा चर्न निवारि कोहा ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥३॥

चतुर्दशी पोषवदी सुहायो । ताही दिना केवललब्धि पायो ॥

शोभै समोसृत्य बखानि धर्म । चर्चों सदा शीतल पर्म शर्म ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥

कुँवारकी आठयँ शुद्धबुद्धा । भये महामोक्षसरूप शुद्धा ॥
समेदतैं शीतलनाथस्वामी । गुनाकरं तासु पदं नमामी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५ ॥

## जयमाला ।

छंद लोलतरंग ( वर्ण ११ ) ।

आप अनंतगुनाकर राजैं । वस्तुविकाशनभानु समाजैं ॥
मैं यह जानि गही शरना है । मोहमहारिपुको हरना है ॥ १ ॥

दोहा—हेमवरन तन तुंग धनु, नव्वै अतिअभिराम ।
सुरतरुअंक निहारि पद, पुनपुन करों प्रणाम ॥ २ ॥

छंद तोटक ( वर्ण १२ ) ।

जय शीतलनाथ जिनंद वरं । भवदाघदवानल मेघझरं ॥ दुखभूभृतभंजन वज्रसमं । भवसागर

नागर पोतपमं ॥ ३ ॥ कुहमानमयागदलोभहरं । अरि विघ्नगयंद मृगिंद वरं ॥ वृषवारिदवृष्टन सृष्टिहितू । परदृष्टि विनाशन सुष्टुपितू ॥ ४ ॥ समवसृतसंजुत राजतु हो । उपमा अभिराम विराजतु हो ॥ वर बारहभेद सभाथितको । तित धर्म वखानि कियौ हितको ॥ ५ ॥ पहले में श्रीगनराज रजैं । दुतियेमैं कलपसुरी जु सजैं ॥ त्रितिये गगनी गुनभूरि धरैं । चवथे तिय-जोतिय जोति भरैं ॥ ६ ॥ तिय विंतरनी पनमें गनिये । छहमें भुवनेसुर ती भनिये ॥ भुवनेश दशों थित सत्तम हैं । वसुमें वसुविंतर उत्तर हैं ॥ ७ ॥ नवमें नभजोतिप पंच भरे । दशमें दिविदेव समस्त खरे ॥ नरवृन्द इकादशमें निवसैं । अरु बारहमें पशु सर्व लसैं ॥ ८ ॥ तजि वैर प्रमोद धरै सब ही । समतारसमग्न लसैं तब ही ॥ धुनि दिव्य सुनै तजि मोहमलं । गन-राज असी धरि ज्ञानबलं ॥९॥ सबके हित तत्त्व बखान करैं । करुनामनरंजित शर्म भरैं ॥ वरने पटद्रव्यतनें जितने । वर भेद विराजतु हैं तितने ॥१०॥ पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना । इक धर्म दुती सुकलं अधुना ॥ तित धर्म सुध्यानतणो गनियो । दशभेद लखे भ्रमको हनियो ॥ ११ ॥ पहलो अरि नाश अपाय सही । दुतियो जिनवैन उपाय गही ॥ त्रिति जीवविचै निजध्यावन है । चवथो सु अजीव रमावन है ॥१२॥ पनमों सु उदैबलटारन है । छहमों अरि-रागनिवारन है ॥ भवत्यागनचिंतन सत्तम है । वसुमों जितलोभ न आतम है ॥ १३ ॥ नवमों जिनकी धुनि सीस धरै । दशमो जिनभाषित हेत करै ॥ इमि धर्मतणो दशभेद भन्यो । पुनि

शुक्लतणो चढु येम गन्यो ॥१४॥ सुपृथक्त वितर्कविचार सही। सुइकत्ववितर्कविचार गही॥ पुनि सूक्ष्मक्रिया प्रतिपात कही। विपरीत क्रिया निरवृत्त लही॥१५॥ इन आदिक सव परकाश कियो। भवि जीवनको शिव स्वर्ग दियो॥ पुनि मोच्छविहार कियो जिनजी। सुखसागर मग्न चिरं गुनजी॥ १६॥ अव मैं शरना पकरी तुमरी। सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी॥ भवव्याधि निवार करो अबही। मति ढील करो सुख द्यो सव ही॥

छंद घत्तानंद।

शीतलजिन ध्यावौं भगति बढ़ावौं, ज्यों रतनत्रयनिधि पावौं।
भवदंद नशावौं शिवथल जावौं, फेर न भौवनमें आवौं॥ १८॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

छंद मालनी—दिढ़रथसुत श्रीमान्, पंचकल्याणधारी।
तिनपदजुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी।
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै।
अनुक्रम अरि दाहै, मोक्षको सो सिधावै॥ १९॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

# श्रीश्रेयांसनाथजिनपूजा ।

छंद रूपमाला तथा गीता ।

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयांशनाथ जिनंद ॥
सिंघपुर जन्मैं सकल हरि, पूजि धरि आनंद ॥
भवबंधध्वंशनहेत लखि मैं, शरन आयौ येव ॥
थापौं चरन जुग उरकमलमें, जजनकारन देव ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांशनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

छंद गीता तथा हरिगीता । ( मात्रा २८ )

कलधौतवरन उतंगहिमगिरिपद्मद्रहतैं आवई ।
सुरसरितप्रासुकउदकसों भरि भृंग धार चढ़ावई ॥

श्रेयाँसनाथ जिनंद त्रिभुवनवंद आनँदकंद हैं।
दुखदंदफंदनिकंद पूरनचंद जोतिअमंद हैं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसों सही।
भवतापभंजनहेत भवदधिसेत चरन जजों सही ॥ श्रे० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति ॥ २ ॥

सितशालि शशिदुतिशुक्तिसुन्दर मुक्तिकी उनहार हैं।
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ॥ श्रे० ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सद सुमन सुमनसमान पावन, मलयतैं मधु झंकरैं।
पदकमलतर धरतैं तुरित सो मदनको मदखंकरैं ॥ श्रे० ॥ ४॥
ॐ ह्री श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

यह परममोदकआदि सरस संवारि सुंदर चरु लियौ ।
तुव वेदनीमदहरन लखि, चरचों चरन शुचिकर हियौ ॥श्रे०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

संशयबिमोहविभरमतमभंजन दिनंदसमान हो ।
तातैं चरनढिग दीप जोऊं देहु अबिचल ज्ञान हो ॥ श्रे० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया ।
दहि अमरजिह्वविषैं चरनढिग करमभरम जराइया ॥श्रे०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावनें ।
लै भगतसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावनें ॥ श्रे० ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलमलयतंदुलसुमनचरु अरु दीपधूपफलावली ।

करि अरघ चरचों चरन जुगप्रभुमोहि तार उतावली ॥श्रे०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पंचकल्याणक ।

छंद आर्या ।

पुष्पोत्तर तजि आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंकों ।
सुरनर मंगल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकाठैंकों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥

जनमें फागुनकारी, एकादशि तीनग्यानदृगधारी ॥
इख्वाकवंशतारी, मैं पूजों घोर विघ्नदुखटारी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥२॥

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा ॥
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजों पाद अष्टपरकारा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥३॥

केवलज्ञान सुजान, माघवदी पूर्णतित्थको देवा ।

चतुरानन भवमानन, वंदौं ध्यावौं करौं सुपदसेवा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥४॥

गिरिसमेदतें पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको ।

कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजों आपनिकट आवनको ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥५॥

## जयमाला ।

छंद लोलतरंग ( वर्ण ११ )

शोभित तुंग शरीर सुजानों । चाप असी शुभलच्छन मानों ॥

कंचनवर्ण अनूपम सोहै देखत रूप सुरासुर मोहै ॥ १ ॥

छंद पद्धडी ( मात्रा १६ )

जै जै श्रेयांस जिन गुनगरिष्ठ । तुमपदजुग दायक इष्टमिष्ट ॥ जय शिष्ट शिरोमणि

जगतपाल जै भवसरोजगन प्रात काल ॥२॥ जै पंचमहाव्रतगजसवार । लै त्यागभावदलवल सु लार ॥ जै धीरजको दलपति बनाय । सत्ताछितिमहँ रनको मचाय ॥ ३ ॥ धरि रतन तीन तिहुं शक्तिहाथ । दशधरमकवच तपटोप माथ ॥ जै शुकलध्यानकर खड़गधार । ललकारे आठौं अरि प्रचार ॥ ४ ॥ तामैं सबको पति मोहचंड । ताकों तत छिन करि सहस खंड ॥ फिर ज्ञानदरसप्रत्यूह हान । निजगुनगढ लीनों अचल थान ॥ ५ ॥ शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार, हुव समवसरणरचना अपार ॥ तित भाषे तत्व अनेक धार । जाकों सुनि भव्य हियें विचार ॥ ६ ॥ निजरूप लह्यौ आनंदकार । भ्रम दूरकरनकों अतिउदार ॥ पुनि नयप्रमाननिच्छेपसार । दरसायो करि संशयप्रहार ॥७॥ तामैं प्रमान जुगभेद एव । परतच्छ परोछ रजैं सुमेव ॥ तामैं प्रतच्छके भेद दोय । पहिलो है संविवहार सोय ॥ ८ ॥ ताके जुगभेद विराजमान । मति श्रुति सोहैं सुंदर महान ॥ है परमारथ दुतियो प्रतच्छ । हैं भेद जुगम तामाहिं दच्छ ॥ इक एकदेश इक सर्वदेश इकदेशं उभैविधिसहित वेश ॥ वर अवधि सु मनपरजै विचार । है सकलदेश केवल अपार ॥ १० ॥ चरअचर लखत जुगपत पतच्छ । निरद्वंदरहित परपंचपच्छ ॥ पुनि है परोच्छमहँ पंच भेद । समिरति अरु प्रतिभिज्ञानवेद ॥ ११ ॥ पुनि तरक और अनुमान मान । आगमजुत पन अब नय बखान ॥ नैगम संग्रह व्यौहार गूढ़ । रिजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ़ ॥ १२ ॥ पुनि एवंभूत सु सप्त एम । नय कहे जिनेसुर

गुन जु तेम ॥ पुनि दरवछेत्र अर काल भाव। निच्छेप चार विधि इमि जनाव ॥ १३ ॥
इनको समस्त भाष्यौ विशेष। जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश ॥ निज ज्ञानहेत ये मूलमंत्र
तुम भाषे श्रीजिनवर सु तंत्र ॥१४॥ इत्यादि तत्वउपदेश देय। हनि शेषकरम निरवान लेय ॥
गिरवान जजत वसु दरब ईश। वृन्दावन नितप्रति नमत सीश ॥१५॥

घतानंद छंद।

श्रेयांस महेशा सुगुनजिनेशा, वज्र धरेशा ध्यावतु हैं।
हम निशदिन बंदैं पापनिकंदैं, ज्यों सहजानँद पावतु हैं ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा—जो पूजै मनलाय, श्रेयनाथपदपद्मको ॥
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरै ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलि क्षिपेत्।

---

# श्रीवासुपूज्य जिनपूजा।

छंद रूपकवित्त।

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद, पूजनहेत हिये उमगाय।
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय॥
महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल बरन तन समतादाय।
सो करुनानिधि कृपादृष्टिकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्॥ १॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः॥ २॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्॥ ३॥

## अष्टक।

छंद जोगीरासा। आंचलीबंध "जिनपदपूजों लवलाई॥"

गंगाजल भरि कनककुंभमैं, प्रासुक गंध मिलाई।

करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई ॥ जिनपद० ॥

वासुपूज वसुपूजतनुजपद, वासव सेवत आई ।

बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥ जिन०॥१॥

ॐ ह्रींश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कृष्णागरु मलयागिरचंदन, केशरसंग घसाई ।

भवआताप विनाशनकारन, पूजों पद चित लाई ॥ वा० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

देवजीर सुखदास शुद्ध वर, सुवरनथार भराई ।

पुंजधरत तुम चरननआगैं, तुरित अखय पदपाई ॥ वा० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पारिजात संतानकल्पतरु,--जनित सुमन बहु लाई ।

मीनकेतुमदभंजनकारन, तुम पदपद्म चढ़ाई ॥ वा० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।; ४ ॥

नव्यगव्यआदिकरसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
छुधारोग निरवारनकारन, तुम्हें जजों शिरनाई ॥ वा० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

दीपकजोत उदोत होत वर, दशदिशमें छवि छाई ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई ॥ वा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशविध गंधमनोहर लेकर, वातहोत्रमें डाई ।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सु धूम उड़ाई ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुरस सुपक्कसुपावन फल लै, कंचनथार भराई ।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई ॥ वा० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलफल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ॥ वा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

छंद पाईता ( मात्रा १४ ) ।

कलि छट्ठ असाढ़ सुहायौ । गरभागम मंगल पायौ ॥
दशमें दिवितें इत आये । शतइंद्र जजे सिर नाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वं०

कलि चौदश फागुन जानों । जनमें जगदीश महानों ।
हरि मेर जजे तब जाई । हम पूजत हैं चितलाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

तिथि चौदस फागुन श्यामा । धरियो तप श्रीअभिरामा ॥

नृपसुंदरके पय पायो । हम पूजत अतिसुख थायो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

वदि भादव दोइज सोहै । लहि केवल आतम जो है ॥
अनअंत गुनाकर स्वामी । नित बंदों त्रिभुवन नामी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णद्वितियायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४ ॥

सितभादवचौदशि लीनों । निरवान सुथान प्रवीनों ॥
पुर चंपाथानकसेती । हम पूजत निजहित हेती ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

## जयमाला ।

दोहा—चंपापुरमें पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो, जै जै जै जिनराय ॥ १ ॥

छंद मोतियदाम ( वर्ण १२ )।

महासुखसागर आगर ज्ञान । अनंत सुखामृतभुक्त महान ॥ महाबलमंडित खंडितकाम । रमाशिवसंग सदा विसराम ॥ २ ॥ सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद । मुनिंद जजैं नित पादर-निंद ॥ प्रभू तुव अंतरभाव विराग । सुवालहिंतें व्रतशीलसों राग ॥ ३ ॥ कियो नहिं राज उदाससरूप । सुभावन भावत आतमरूप ॥ अनित्य शरीर प्रपंच समस्त । चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥ ४ ॥ अशर्न नही कोउ शर्न सहाय । जहां जिय भोगत कर्मविपाय ॥ निजातम कै परमेसुर शर्न । नहीं इनके विन आपदहर्न ॥ ५ ॥ जगत्त जथा जलबुद्बुद येव । सदा जिय एक लहै फलभेव ॥ अनेकप्रकार धरी यह देह । भमैं भवकानन आनन नेह ॥ ६ ॥ अपावन सात कुधात भरीय । चिदातम शुद्धसुभाव धरीय ॥ धरै इनसों जब नेह तबेव । सुआवत कर्म तबै वसुभेव ॥ ७ ॥ जबै तनभोगजगत्तउदास । धरै नव संवर निर्जरआस ॥ करै जब कर्मकलंक विनाश । लहै तब मोक्ष महासुखराश ॥ ८ ॥ तथा यह लोक नराकृत नित्त । विलोकियते षट्द्रव्यविचित्त ॥ सुआतमजानन बोधविहीन । धरै किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन ॥ ९ ॥ जिनागमज्ञानरु संयमभाव । सबै निजज्ञान विना विरसाव ॥ सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल । सुभाव सबै जिहतें शिव हाल ॥ १० ॥ लयो सब जोग सुपुन्य वशाय । कहो किमि दीजिय ताहि गंवाय ॥ विचारत यों लवकान्तिक आय । नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ॥ ११ ॥ कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार । प्रबोधि सु येम कियो जु विहार ॥ तबै

सबधर्मतनों हरि आय। रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय॥ धरे तप पाय सुकेवलबोध। दियो उपदेश सुभव्य सँबोध॥ लियो फिर मोक्ख महासुखराश। नमैं तिन भक्त सोई सुखआश॥

घत्तानंद।

नित वासववन्दत, पापनिकंदत, वासपूज्य ब्रत ब्रह्मपती।
भवसंकलखंडित, आनँदमंडित, जै जै जै जैवंत जती॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

सोरठा—वासपूजपद सार, जजौं दरबविधि भावसों।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम॥ १५॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

# श्रीविमलनाथ जिनपूजा।

छंद मदावलिप्तकपोल ( मात्रा २४ )।

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय।

कृतधर्मानृपनंद, मातु जयसेन धर्मप्रिय ।

तीन लोक वरनंद, विमल जिन विमल विमलकर ।

थापों चरनसरोज, जजनके हेत भावधर ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक ।

सोरठा छंद ( मनसुखरायजीकृत ) ।

कंचनझारी धारि, पद्मद्रहको नीर ले ।

त्रषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये ॥१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति ॥ १ ॥

मलयागर करपूरा देववल्लभा संग घसि ।

हरि मिथ्यातमभूर, विमलविमलगुन जजतु हों ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति

वासमती सुखदास, स्वेत निशापतिको हंसै ।

पूरै वांछित आस, विमलविमलगुन जजत ही ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पारिजात मंदार, संतानकसुरतरुजनित ।

जजों सुमन भरि थार, विमल विमलगुन मदनहर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नव्यगव्य रसपूर, सुवरनथार भरायकें ।

छुधावेदनी चूर, जजों विमलपद विमलगुन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मानिक दीप अखंड, गो छाई वर गो दशों ।

हरो मोहतम चंड, विमल विमलमतिके धनी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अगर तगर घनसार, देवदार कर चूर वर ।
खेवों वसु अरि जार, विमल विमलपदपद्मढिग ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७॥

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने ।
जजों विमलपद सार, विघ्न हरैं शिवफल करैं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

आठों दरव संवार, मनसुखदायक पावने ।
जजों अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

छंद द्रुतिविलम्बित तथा सुंदरि ( वर्ण १२ ) ।

गरभ जेठवदी दशमी भनों । परम पावन सो दिन शोभनों ॥

करत सेव सची जननीतणी। हम जजैं पदपद्मशिरोमणी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुकलमाघ तुरी तिथि जानिये। जनममंगल तादिन मानिये ॥
हरि तबै गिरिराज बिषैं जजे, हम समर्चत आनंदको सजे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ २ ॥

तप धरे सितमाघ तुरी भली। निज सुधातम ध्यावत हैं रली ॥
हरि फनेश नरेश जजे तहां। हम जजै नित आनँदसों इहां ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य ॥

विमल माघरसी हनि घातिया। विमलबोध लयो सब भासिया ॥
विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै। विमल आनंद देहु हमैं सबैं ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

भ्रमरसाढ़रसी अति पावनों। विमल सिद्ध भये मनभावनों ॥

गिरसमेद हरी तित पूजिया हम जजैं इतहर्ष धरें हिया ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति

## जयमाला

दोहा छंद। अति उपमालंकार।

गनन चहत उड़गन गगन, छिति थितिके छँहँ जेम।
तिमि गुन बरनन बरनन,—माहिं होय तव केम ॥ १ ॥
साठधनुष तन तुंग है, हेमवरन अभिराम।
वर बराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥ २ ॥

छंद तोटक। ( वर्ण १२ )।

जय केवलब्रह्म अनंतगुनी। तुव ध्यावत शेष महेश मुनी ॥ परमातम पूरन पाप हनी। चितचिंततदायक इष्ट धनी ॥ ३ ॥ भवआतपध्वंसन इन्दुकरं। वर साररसायन शर्मभरं ॥ सब जन्मजरामृतदाघहरं। शरनागतपालन नाथ वरं ॥ ४ ॥ नित संत तुमे इन नामनितै ॥ चितचिंतत हैं गुनगामनितै ॥ अमलं अचलं अटलं अतुलं। अरलं अछलं अथलंअकुलं ॥ ५ ॥

अजरं अमरं अहरं अडरं। अपरं अभरं अशरं अनरं॥ अमलीन अछीन अरीन हने। अमतं अगतं अरतं अघने॥ ६॥ अछुधा अतृषा अभयातम हो। अमदा अगदा अवदातम हो॥ अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना। अतलं अशलं अनअंत गुना॥ ७॥ अरसं सरसं अकलं सकलं। अवचं सवचं अमनं सबलं॥ इन आदि अनेकप्रकार सही। तुमको जिन संत जपैं नित ही॥ ८॥ अब मैं तुमरी शरना पकरी। दुख दूर करो प्रभुजी हमरी॥ हम कष्ट सहे भवकाननमैं। कुनिगोद तथा थल आननमैं॥ ९॥ तित जामनमर्न सहे जितने। कहि केम सकैं तुमसों तितने॥ सुमूहूरत अन्तरमाहिं धरे। छह त्रै त्रय छः छहकाय खरे॥ १०॥ छिति वह्नि वयारिक साधरनं। लघु थूल विभेदनिसों भरनं॥ परतेक वनस्पति ग्यार भये। छहजार द्वादश भेद लये॥ ११॥ सब द्वै त्रय भू षट छःसु भया। इक इन्द्रियकी परजाय लया॥ जुग इन्द्रिय काय असी गहियो। तिय इन्द्रिय साठनिमें रहियो॥ १२॥ चतुरिंदिय चालिस देह धरा। पनइंदियके चववीस वरा॥ सब ये तन धार तहां सहियो। दुखघोर चितारित जात हियो॥ १३॥ अब मो अरदास हिये धरिये। सुखदंद सबै अब ही हरिये॥ मनवंछित कारज सिद्ध करो। सुखसार सबै घर रिद्ध धरो॥ १४॥

घत्तानंद छंद।

जै विमलजिनेशा नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा॥

भवतापअशेषा, हरननिशेशा दाता चिन्तित शर्म सदा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—श्रीमत विमलजिनेशपद, जो पूजौ मनलाय ।
पूजैं वांछित आश तसु । मैं पूजों गुनगाय ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः । परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् !

इति श्रीविमलनाथजिनपूजा समाप्त ॥ १३ ॥

## श्रीअनन्तनाथजिनपूजा ।

कवित्त छंद ( मात्रा ३१ ) ।

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सूर्याउर आय ।
सिंघसेन नृपके नंदन, आनंद अशेष भरे जगराय ॥
गुन अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय ।
थापतु हों त्रयवार उचरिकै कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ट । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक ।

छंद गीता तथा हरिगीता ( मात्रा २८ ) ।

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया ।
मलकरम धोवन हेत मन, वचकाय धार ढराइया ॥
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों ।
शिवकंतवंत महंत ध्यावों, भ्रंतवंत नशावनों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ॥१ ॥

हरिचंद कदलीनंद कुंकुम, दंतताप निकंद है ।
सब पापरुजसंतापभंजन, आपको लखि चंद है ॥ ज० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ॥ २ ॥

कनशालदुति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितें घनी ।
तसु पुंज तुम पद्तर धरत, पद् लहत स्वच्छ सुहावनी ॥ज०॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

पुष्कर अमरतरजनित वर, अथवा अवर कर लाइया ।
तुम चरनपुष्करतर धरत, सरशूल सकल नशाइया ॥ज०॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

पकवान नैना घ्रान रसना,--को प्रमोद् सुदाय हैं ।
सो ल्याय चरन चढ़ाय रोग, छुधाय नाश कराय हैं ॥ज०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नेवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

तममोहभानन जानि आनँद, आनि सरन गही अबै ।
वर दीप धारों बारि तुमढ़िग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै ॥ज०॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

यह गंध चूरि दशांग सुंदर, धूम्रध्वजमें खेय हों ।

वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम वेय हों ॥ज०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

रसथक्व पक्व सुभक्व चक्व, सुहावनें मृदुपावनें ।

फलसारवृंद अमंद ऐसो, ल्याय पूज रचावनें ॥ज०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

शुचिनीर चंदन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।

अरु धूप जुत, अरघ करि करजोरजुग विनती करों ॥ज०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंननाथजिनेद्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति० ॥ ९ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

छंद सुंदरी तथा द्रुतिविलंवित ।

असित कातिक एकम भावनों । गरभको दिन सो गिन पावनों ।
किय सची तित चर्चन चावसों । हम जजैं इत आनँद भावसों ॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदिगर्भमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥१॥

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी । सकलमंगल लोकविषैं लशी ।
हरि जजे गिरिराज समाजतैं । हम जजैं इत आतमकाजतैं ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताये श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥२॥

भवशरीर विनस्वर भाइयो असित जेठदुवादशि गाइयो ।
सकल इंद्र जजे तित आइकैं । हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं ॥

असित चैत अमावसको सही । परम केवल ज्ञान जग्यो कही ।
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो । हम समर्चत विघ्न सबै हरो ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

असित चैततुरी तिथिगाइयो । अघतघाति हने शिवपाइयो ।
गिरिसमेद जजे हरि आयकैं । हम जजैं पद प्रीति लगायकैं ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीअनन्तताथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

## जयमाला ।

दोहा—तुम गुनबरनन येम जिम, खंविहाय करमान ॥
तथा मेदिनी पदनिकरि, कीनों चहत प्रमान ॥ १ ॥
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलजवृंद बिहसाय ॥
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥ २ ॥

छंद नयमालनी । तथा चंडी । तथा तामरस ( मात्रा १६ ) ।

जै अनन्त गुनवंत नमस्ते । शुद्धध्येय नितसंत नमस्ते ॥ लोकालोकविलोक नमस्ते । चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते ॥ ३ ॥ रत्नत्रयधर धीर नमस्ते । करमशत्रुकरिकीर नमस्ते ॥ चारअनंत महंत नमस्ते । जैं जै शिवतिकंत नमस्ते ॥ ४ ॥ पञ्चाचारविचार नमस्ते । पंचकर्णमदहार नमस्ते ॥ पंच-पराव्रत-चूर नमस्ते । पंचमगतिसुखपूर नमस्ते ॥ ५ ॥ पंचलब्धि-धरनेश नमस्ते । पंचभावसिद्धेश नमस्ते ॥ छहों दरबगुनजान नमस्ते । छहो काल पहिचान नमस्ते ॥ ६ ॥ छहोंकायरच्छेश नमस्ते । छहसम्यक उपदेश नमस्ते ॥ सप्तविशनवनवह्नि नमस्ते । जय केवलअपरह्नि नमस्ते ॥ ७ ॥ सप्ततत्वगुनभनन नमस्ते । सप्तशुभ्रगतहनन

नमस्ते ॥ सप्तभङ्गके ईश नमस्ते । सातों नयकथनीश नमस्ते ॥८॥ अष्टकरममलदल्ल नमस्ते । अष्टजोगनिरशल्ल नमस्ते ॥ अष्टम-धराधिराज नमस्ते । अष्ट-गुननि-सिरताज नमस्ते ॥ ९ ॥ जै नवकेवल-प्राप्त नमस्ते । नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते ॥ दशों धरमधरतार नमस्ते । दशों बंधपरिहार नमस्ते ॥ १० ॥ विघ्न-महीधर-विज्जु नमस्ते । जै उरधगति-रिज्जु नमस्ते ॥ तनकनकंदुति पूर नमस्ते ।. इख्वाकजगनसूर नमस्ते ॥ ११ ॥ धनु पचासतन उच्च नमस्ते । कृपासिन्धु गुन शुच्च नमस्ते ॥ सेही-अंक निशंक नमस्ते । चितचकोर मृगअंक नमस्ते ॥ १२ ॥ रागदोपमदहार नमस्ते । निजविचारदुखहार नमस्ते ॥ सुर-सुरेश-गन-वंद नमस्ते । 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते ॥ १३ ॥

घत्तानंद छंद ।

जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं, नितकृतचित हुल्लासधरं ॥
आपदउद्धारं, समतागारं, वीतरागविज्ञान भरं ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मदावलिप्त-कपोल तथा रोड़क छंद ( ( मात्रा २४ ) ।

जो जन मनवचकायलाय, जिन जजै नेह धर ।

वा अनुमोदन करै करावै पढ़ै पाठ वर ॥
ताके नित नव होय, सुमंगल आनँददाई ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै सामग्री पाई ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीधर्मनाथजिनपूजा ।

माधवी तथा किरीट छंद ( ८ सगण व गुरु ) ।

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानके आनि अनंद बढ़ाये ।
जगमातसुब्रत्तिके नंदन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढाये ॥
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश है, दासनिको शिवस्वर्ग मँढाये ।
तिनके पद पूजनहेत त्रिबार, सुथापतु हों यह फूल चढ़ाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक ।

छंद जोगीरासा ( मात्रा २८ ) ।

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी ।
जनमजरामृत तापहरनको, चरचौं चरन तुम्हारी ॥
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।
पूजों पाय गाय गुन सुंदर, नाचौं दै दै तारी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

कुशर चंदन कदली नंदन, दाहनिकंदन लीनों ।
जलसँगघस लसि शसिसमशमकर, भवआताप हरीनों ॥ पर०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो।
पुंज धरत आनंद भरत भव,-दंद हरत हरषायो ॥ पर० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सुमनसम सुमनथालरम, सुमनवृंद विहसाई।
सुमन-मथ-मद मथनके कारन, चरचों चरन चढ़ाई ॥ पर० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति ॥ ४ ॥

घेवर बावर अर्द्धचन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै ॥पर०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रधीर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सुंदर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै।
नेह सहित गाऊं गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै ॥पर०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कृष्णागर तरदिव हरिचंदन करपूरं ।
चूर खेय जलजवनमांहि जिमि, करम जरैं वसु कूरं ॥पर ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

आम्र काङ्क्ष अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई ।
सो ले तुमढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोच्छठकुराई ॥पर॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई ।
बाजत द्रम द्रम द्रम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥ पर० ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पंचकल्याणक ।

राग टप्पाकी चाल 'जोयोरे गंवार तैं सारो दिन यों ही खोयो' । ऐसी ।

पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों । पूजों हो । टेक ।

आठैं सित वैशाखकी हो। गरभदिवस अविकार ॥
जगजन वंछित पूजों हो अबार,
धरमजिनेसुर पूजों। पूजो हो० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ १ ॥

शुकल माघ तेरस लयो हो। धरम धरम अवतार ॥
सुरपति सुरगिर पूजों। पूजों हो अबार, ॥ धरम० ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ २ ॥

माघशुकल तेरस लयो हो। दुद्धर तप अविकार ॥
सुररिषि सुमनन पूज्यो। पूजों हो अबार, ॥ धरम ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमाघशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पोषशुकल पूरन हने अरि। केवल लहि भवितार ॥
गनसुर नरपति पूज्यो। पूजों हो अबार, ॥ धरम० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपौषशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ॥

जेठशुकल तिथि चौथकी हो। शिव समेदतैं पाय ॥
जगतपूजपद पूजों। पूजों। हो अबार ॥ धरम० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ॥ ५ ॥

## जयमाला ।

दोहा ( विशेपोक्ति अलंकार ) ।

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत ।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत ॥ १ ॥

छंद पद्धरी ( मात्रा १६ ) ।

जय धरमनाथ जिन गुनमहान । तुम पदको मैं नित धरों ध्यान ॥ जय गरभजनम तप ज्ञानयुक्त । वर मोच्छ सुमंगल शर्म-भुक्त ॥ २ ॥ जय चिदानंद आनंदकंद । गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमंद ॥ तुम जीवनिके विनु हेत मित्त । तुम ही हो जगमें जिन पवित्त ॥ ३ ॥ तुम समवसरणमें तत्वसार । उपदेश दियो है अति उदार ॥ ताकों जे भवि निजहेत चित्त ।

धारैं ते पावैं मोच्छवित्त ॥ ४ ॥ मैं तुम मुख देखत आज पर्म। पायो निजआतमरूप धर्म ॥ मोकों अब भौभयतें निकार। निरभयपद दीजै परमसार ॥ ५ ॥ तुम सम मेरो जगमे न कोय। तुमहीतें सब विधि काज होय ॥ तुम दयाधुरंधर धीर वीर। मेटी जगजनकी सकल पीर ॥६॥ तुम नीतनिपुन विनरागदोष। शिवमग दरसावतु हो अदोष ॥ तुम्हरे ही नामतने प्रभाव। जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव ॥ ७ ॥ तातैं मैं तुमरी शरण आय। यह अरज करतु हो शीस नाय ॥ भवबाधा मेरी मेट मेट। शिवरासों करि भेट भेट ॥ ८ ॥ जंजाल जगतको चूर चूर। आनंद अनूपन पूर पूर ॥ मति देर करो सुनि अरज एव। हे दीनदयाल जिनेश देव ॥ ९ ॥ मोंको शरना नहिं और ठौर। यह निहचै जानों सुगुन-मौर ॥ वृन्दावन, वंदत प्रीति लाय। सब विघन मेट हे धरम-राय ॥ १० ॥

छंद घत्तानंद ( मात्रा ३१ )।

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं. श्रीजिनधर्मं उपदेशा।
तुम दयाधुरंधर विनतपुरंदर, कर उरमंदर परवेशा ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

छंद मदावलिप्तकपोल ( मात्रा २४ )।

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव।
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनँदसमाज सब॥
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै।
वृंदावन यह जानि धरम, जिनको गुन ध्यावै॥ १॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

# श्रीशान्तिनाथ जिनपूजा।

मत्तगयंद छंद। ( शब्दाडम्बर तथा जमकालंकार )।

या भवकाननमें चतुरानन, पापपनानन घेरि हमेरी।
आतमजान न मान न ठान न, बान न होइ हिये सठ मेरी॥
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आननटेरी।
आन गही शरनागतको, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक ।

छंद त्रिभंगी । अनुप्रयासक्क । ( मात्रा ३२ जगनवर्जित ) ।

हिमगिरिगतगंगा,--धार अभंगा, प्रासुक संगा, भरि भृंगा ।
जरमरनमृतंगा, नाशी अघंगा, पूजि पदंगा मृदुहिंगा ॥
श्रीशान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं, मक्रेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ॥ १ ॥

वर बावनचंदन, कदलीनंदन, घनआनंदन सहित घसों ।
भवतापनिकन्दन, ऐरानंदन, वंदि अमंदन, चरनवसों ॥श्री० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ॥ २ ॥

हिमकरकरी लज्जत, मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरिथारी।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत, भवभय भज्जत, अतिभारी॥श्री०३

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

मंदार सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं।
भरि कञ्चनथारी, तुम ढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं॥श्री०४

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

पकवान नवीने, पावन कीने, षटरसभीने, सुखदाई।
मनमोदनहारे, क्षुधा विदारे, आगैं धारे, गुनगाई ॥ श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति ॥ ५ ॥

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतम नाशे, ज्ञेयविकाशे सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोहनिवारा, निज भासे ॥श्री ६

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति ॥ ६ ॥

चन्दन करपूरं, करि वर चूरं, पावक भूरं, माहि जुरं।
तसु धूम उडावै, नांचत जांवै, अलि गुंजावै, मधुरसुरं ॥श्री०॥७॥

ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं निंबुक भूरं, लै आयो।
तासों पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निजरसरज्जों; उमगायो ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य सँवारी, तुमढिग धारी, आनंदकारी, दृगप्यारी।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी, शरनारी ॥० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पंच कल्याणक

सुंदरी तथा द्रुतिविलंबित छंद।

असित सातय भादवँ जानिये। गरभमंगल तादिन मानिये ॥

सचि कियो जननी पद चर्चनं । हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है । सकलइंद्र सु आगत धाम है ॥
गजपुरै गज राज सबै तजै । गिरि जजे इत मैं जजि हो अबै ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥२॥

भव शरीर सुभोग असार हैं । इमि विचार तबै तप धार हैं ॥
भ्रमर चौदश जेठ सुहावनी । धरमहेत जजों गुन पावनी ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुकलपौष दशैं सुखराश है । परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है ॥
भवसमुद्रउधारन देवकी । हम करैं नित मंगल सेवकी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥४॥

असित चौदस जेठ हनें अरी । गिरि समेदथकी शिव-ती वरी ॥

सकलइंद्र जजैं तित आइकैं। हम जजैं इत मस्तक नाइकैं ॥५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दशयां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥५॥

## जयमाला

छंद रथोद्धता, चंद्रवत्स तथा चंद्रवर्त्म (वर्ण ११—लाटानुप्रास)

शान्ति शान्तिगुनमंडिते सदा। जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा॥
मैं तिन्हें भगतमंडिते सदा। पूजि हौं कलुषहंडिते सदा॥ १॥
मोच्छहेत तुम ही दयाल हो। हे जिनेश गुनरत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरों। ध्यावतें तुरित मुक्ति-ती वरों॥२॥

छंद पद्धरि (१६ मात्रा)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज। भवसागरमे अदभुत जहाज॥ तुम तजि सरवारथसिद्ध थान। सरवारथजुत गजपुर महान॥ १॥ तित जनम लियौ आनंद धार। हरि ततछिन आयो राजद्वार॥ इंद्रानी जाय प्रसूतथान। तुमको करमें लै हरष मान॥ २॥ हरि गोद देय सो मोदधार। सिर चमर अमर ढारत अपार॥ गिरिराज जाय नित शिला पांड। तापै थाप्यो

अभिषेक माड ॥ ३ तित पंचम उदधि तनों सु वार। सुर कर कर करि ल्याये उदार ॥ तव इंद्र सहसकर करि अनंद। तुम सिर धारा ढालौ सुनंद ॥४॥ अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धध धध कलशशोर ॥ द्रुमद्रुम द्रुमद्रुम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नूपुरंग ॥५॥ तन नन नन नन नन तनन तान। घन नन नन घंटा करत ध्वान ॥ ताथेई थेइ थेइ थेइ सुचाल। जुत नाचत नावत तुमहिं भाल ॥६॥ चट चट चट अटपट नटत नाट। झट झट झट हट नट शट विराट ॥ इमि नाचत राचत भगत रंग। सुर लेत जहां आनंद संग ॥ ७ ॥ इत्यादि अतुल मंगल सुठाट। तित बन्यौ जहां सुरगिरि विराट ॥ पुनि करि नियोग पितुसदन आय। हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥ पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न। भोग्यौ छखंड करि धरम जत्न ॥ पुनि तप धरि केवलरिद्धि पाय। भवि जीवनकों शिवमग बताय ॥ शिवपुर पहुचे तुम हे जिनेश। गुनमंडित अतुल अनन्त भेष ॥ मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय। हमरो भवबाधा हरि जिनाय ॥१०॥ सेवक अपनो निज जान जान। करुना करि भौभय भान भान ॥ यह विघन मूल तरु खंड खंड। चितचिन्तित आनंद मंड मंड ॥ ११ ॥

घत्तानंद छंद ( मात्रा ३१ )

**श्रीशान्ति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनंता, भगवन्ता।**

भवभ्रमन हनंता, सौख्यअनंता, दातारं तारनवन्ता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

छंद रूपक सवैया ( मात्रा ३१ )

शांतिनाथजिनके पदपंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय ।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय ॥
मनवंछित सुख पावै सो नर, बाँचै भगतिभाव अति लाय ।
तातैं 'वृन्दावन' नित बंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

# श्रीकुंथनाथ जिनपूजा ।

छंद माधवी तथा किरीट ( वर्ण २५ ) ।

अजअंक अजैपद राजै निशंक, हरै भवशंक निशंकित दाता ।
मतमत्त मतंगके माथे गँथे, मतवाले तिन्हैं हनै ज्यौं हरिहाता ॥

गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौं, रविके प्रभनंदन श्रीमतिमाता ।
सहकुंथुसुकुंथुनिके प्रतिपालक, थापों तिन्हें जुतभक्ति विख्याता ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

## अष्टक

चाल लावनी मरहठी की लाला मनसुखरायजी कृत ।

कुंथु सुन अरज दासकेरी । नाथ सुनि अरज दासकेरी ॥
भवसिन्धु पर्‌यो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी ॥
प्रभू सुन अरज दासकेरी । नाथ सुनि अरज दासकेरी ॥
जगजाल पर्‌यो हों बेग निकारो बांह पकर मेरी ॥ टेक ॥
सुरतरनीको उज्जलजल भरि, कनकभृंग भेरी ।

मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरौं धार नेरी ॥ कुंथु० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

बावन चंदन कदलीनंदन, घँसिकर गुन टेरी ।
तपत मोह नाशनके कारन, धरौं चरन नेरी ॥ कुंथु० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मुक्ताफलसम उजल अच्छत, सहित मलय लेरी ।
पुंज धरौं तुम चरनन आगैं, अखय सुपद देरी ॥ कुंथु० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतकी बेला दौना, सुमन सुमनसेरी ।
समर शूलनिरमूल हेतु प्रभु, भेंट करौं तेरी ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।

सो लै चरन जजों भ्रम तम रबि, निज सुबोधदेरी ॥ कुं० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।

अष्ट करम ततकाल जरै ज्यौं, धूम धनंजेरी ॥ कुंथु ० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

लौंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।

मोच्छ महाफल चाखन कारन, जजों सुखरि ढेरी ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।

फलजुत जजन करों मन सुख धरि हरो जगत फेरी ॥ कुं० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

## पंच कल्याणक

मोतीदाम छन्द ( वर्ण १२ )

सुसावनकी दशमी कलि जान । तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ॥
भयो गरभागममंगल सार । जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलप्राप्तये श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥१॥

महा वयशाख सु एकम शुद्ध । भयो तब जन्मतिज्ञान समुद्ध ॥
कियो हरि मंगल मंदिरशीस । जजैं हम अत्र तुम्हें नुतशीस ॥२॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तज्यो खटखंड विभौ जिनचंद । विमोहितचित्तचितारि सुछंद ॥
धरे लप एकम शुद्ध विशाख । सुमग्न भये निजआनंद चाख ॥३॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त । चहूं अरि छै करि तादिन व्यक्त ॥
भई समवस्रत भाखि सुधर्म । जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म ॥४॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सुदी वयशाख सु एकम नाम । लियो तिहिं द्यौस अभै शिवधाम

जजे हरि हर्षित मंगल गाय। समर्चतु हौं सु हिय। वचकाय ॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपद मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

## जयमाला

अरिल्ल छन्द ( मात्रा २१ रूपकालंकार )

खट खंडनके शत्रु राजपदमें हने। धरि दीचा खटखंडन पाप तिन्हैं दनैं ॥ त्यागि सुदरशन चक्र धरमचक्री भये। करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ़ गढ़ लये ॥१॥ ऐसे कुंथु जिनेशतनें पदपद्मको। गुन अनंत भंडार महासुखसद्मको ॥ पूजों अरघ चढ़ाय पूरणानंद हो। चिदानन्द अभिनन्द इंदगनवंद हो ॥ २ ॥

पद्धरि छंद ( मात्रा १६ )।

जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव। तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिबुकेव ॥ जय बुद्धि विदांबर विष्णु ईस। जय रमाकंत शिवलोक शीस ॥ ३ ॥ जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल। जय जय जगबंधू सुगुनमाल ॥ सरवारथसिद्धविमान छार। उपजे गजपुरमें गुन अपार ॥ ४ ॥ सुरराज कियो

गिरन्हौन जाय ॥ आनन्द-सहित जुत-भगत भाय ॥ पुनि पिता सौंपि कर मुदित अंग। हरि तांडव-निरत कियो अभंग ॥ पुनि स्वर्ग गयो तुम इन दयाल। वय पाय मनोहर प्रजापाल ॥ षटखंड विभो भोग्यौ समस्त। फिर त्याग जोग धार्‌यो निरस्त ॥ ६ ॥ तव घाति घात केवल उपाय। उपदेश दियो सवहित जिनाय ॥ जाके जानत भ्रम-तम विलाय। सम्यकदरशन निरमल लहाय। ७। तुम धन्य देव किरपा-निधान। अज्ञान-छपा-तमहरन भान ॥ जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त। जय स्वच्छ सुकामृत भुक्तभुक्त ॥८॥ जय भोभयभंजन कृत्यकृत्य। मैं तुमरो हों निज भृत्य भृत्य ॥प्रभु अशरन शरन अधार धार। मम विघ्नतूलगिरी जार जार ॥९॥ जय कुनय-यामिनी सूर सूर। जय मनवंछित सुख पूर पूर ॥ मम करम वध दिढ़ चूर चूर। निजसम आनन्द दे भूर भूर ॥ ० ॥ अथवा जब लौं शिव लहौं नाहि। तव लों ये तो नित ही लहाहिं। भव भव श्रावक-कुलजनमसार। भव भव सतमत सतसंग धार ॥११॥ भव भव निज आतम-तत्व-ज्ञान। भव भव तप संजम शील दान ॥ भव भव अनुभव नित चिदानंद। भव भव तुम आगम हे जिनंद ॥१२॥ भव भव समाधिजुत मरन सार। भव भव व्रत चाहों अनागार ॥ यह मोकों हे करुणानिधान। सब जोग मिलो आगम प्रमान ॥१३॥ जब लो शिव सम्पति लहों नाहिं। तबलों मैं इनकों नित लहाँहिं ॥ यह अरज हिये अवधारि नाथ। भव-संकट हरि कीजे सनाथ ॥१४॥

छन्द घत्तानंद ( मात्रा ३१ )

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला ॥
मैं पूजों ध्यावों, शीस नमावों, देहु अचल पदकी चाला ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

छन्द रोड़क मात्रा ( २४ )

कुंथुजिनेसुरपादपदम, जो प्रानी ध्यावैं ।
अलि समकर अनुराग, सहज सो निजनिधि पावैं ॥
जो बाँचैं सरदहै, करै अनुमोदन पूजा,
वृन्दावन तिह पुरुप सदृश, सुखिया नहिं दूजा ॥१६॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीअरनाथ जिनपूजा ।

छप्पय छन्द ( वीररसरूपकालंकार मात्रा १-२ )

तप तुरंग असवार धार, तारन विवेक कर।
ध्यान शुक्ल असि धार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ॥
भावन सेना धरम, दशों सेनापति थापे।
रतन तीन धर सकति, मंत्रि अनुभो निरमापे ॥
सत्तातल सोहं सुभट धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि।
इहविध समाज सज राजकों, अरजिन जीते करम अरि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक

छन्द त्रिभंगी ( अनुप्रयासक मात्रा ३२—जगनवर्जित )

कनमनिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीरभरी ॥
मुनिमनसम उज्जल, जनमजरादल, सो लै पदतल, धार करी ॥

प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम् ।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं वरभालम् ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥
भवताप नशावन विरद सुपाव, सुनि मन भावन मोद भयो ।
तातैं घसि बावन, चंदन पावन, तरहिं चढ़ावन उमगि अयो ॥प्रभु०॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदन ॥ २ ॥
तंदुल अनियारे, श्वेतसँवारे, शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता, जगविख्याता, लखि भवताता, पुंजधरे ॥ प्रभु०
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥
सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित, सुमन अछोभित, लै आयौ ।
मनमथके छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन, गुन गायौ ॥ प्रभु०
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥
नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक, पक्षकरक्षक, स्वच्छ धरी ।

तुम करसनिकच्चक, भस्मकलच्चक, दच्चक, पच्चक, रच्चकरी ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

तुम भ्रमतमभंजन, मुनिमनकंजन,—रंजन गंजनमोहनिशा ।

रवि केवलस्वामी, दीप जगामी, तुम ढिग आमी, पुन्यदशा ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशधूप सुरंगी गंधअभंगी वन्हिवरंगीमाहिं हवै ।

वसुकर्म जरावै धूमउड़ावै, ताँडव भावे नृत्य पवै ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नर्विपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

रितुफल अतिपावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें ।

तुम विघनविदारक, शिवफलकारक, भवदधि-तारक, चरचीनें ॥प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं तंदुलशीरं, पुष्पचरु ।

वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं, अर्घंकरं ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

## पच कल्याणक

छद चौपाई ( मात्रा १६ )।

फागुन सुदी तीज सुखदाई । गरभ सुमंगल ता दिन पाई ॥
मित्रादेवी उदर सु आये । जजे इंद्र हम पूजन आये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ १ ॥

मॅगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै । गजपुर जनम भयौ जग मोहै ॥
सुरगुरु जजे मेरुपर जाई । हम इत पूजैं मनवचकाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥२॥

मंगसिर सित चौदस दिन राजै । तादिन संजम धरे विराजै ।
अपराजित घर भोजन पाई । हम पूजें इत चित हरषाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां निःक्रममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

कार्तिक सित द्वादसि अरि चूरे। केवलज्ञान भयो गुन पूरे ॥
समवसरनथित धरम बखाने। जजत चरन हम पातक भाने ॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

चैत शुकल ग्यारस सब कर्म। नाशि वास किय शिव-थल पर्म।
निहचल गुन अनन्त भंडारी। जजों देव सुधि लेहु हमारी ॥ ५ ।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

## जयमाला

दोहा छंद ( जमकपद तथा लाटानुबंधन। )

बाहर भीतरके जिते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अरजिन भये, साहर शिवपुर राय ॥ १ ॥
राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।

हेमवरन तन वरप वर, नव्वै सहस सुआय ॥ २ ॥

छंद तोटक (वर्ण १२)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी। जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी ॥ भवभीमभवोदधि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ३ ॥ गरभादिक मंगल सार धरे। जग जीवनिके दुखदंद हरे ॥ कुरुवंशशिखामनि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ४ ॥ करि राज छखंड-विभूतिमई। तप धारत केवलबोध ठई ॥ गण तीस जहां भ्रमवारन हैं। अरनाथ नमों सुख-कारन हैं ॥५॥ भविजीवनिको उपदेश दियौ। शिवहेत सब जन धारि लियौ ॥ जगके सब संकट टारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ६ ॥ कहि बीसप्ररूपनसार तहां। निजशर्म-सुधारस धार जहां ॥ गति चार हयी पन धारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥७॥ खट काय तिजोग तिवेद मथा। पनवीस कपा वसु ज्ञान तथा ॥ सुर संजमभेद पसारन है। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥८॥ रस दर्शन लेश्यय भव्य जुगं। खट सम्यक सैनिय भेद युगं ॥ जुग हार तथा सु अहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥९॥ गुनथान चतुर्दश मारगना। उपयोग दुवादश भेद भना ॥ इमि वीस विभेद उचारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१०॥ इन आदि समस्त बखान कियो। भवि जीवननें उरधार लियौ ॥ कितने

शिववादिन धारन हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥११॥ फिर आप अघाति विनाश सवै। शिवधामविषै थित कीन तवै॥ तक्कत्यभू कृप्र जगतारन हैं । अरनाथ नमों सुख कारन हैं ॥१२॥ अब दीनदयाल दया धरिये । मम कर्म कलंक सवै हरिये ॥ तुमरे गुनको कछु पार न हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१३॥

घत्तानंद छन्द (मात्रा ३१)

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं ।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारन, जय जिनवर जगत्रातारं ॥१४॥

इति श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्द आर्या , मात्रा ६० )

अर जिनके पदसारं, जो पूजै द्रव्यभावसों प्रानी ।
सो पावै भवपारं, अजरामर मोच्छथान सुखखानी ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वादःपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

---

# श्रीमल्लिनाथजिनपूजा ।

अपराजिततें आय नाथ मिथिलापुर जाये । कुंभरायके नन्द, प्रजा-
पति मात बताये ॥ कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजैं ।
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रमभाजैं ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

## अष्टक ।

छंद जोगीरासा ( मात्रा २८ )

सुर-सरिता-जल उज्जल लौ कर, मनिभृंगार भराई ।
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहुं चरन जिनराई ॥

राग-दोष-मद-मोहहरनको, तुम ही हौ वरवीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, बेग हरो भवपीरा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

बावनचंदन कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसायौ ॥
लेकर पूजौं चरनकमल प्रभु, भवआताप नसायो ॥ राग० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ॥ २॥

तंदुलशशिसम उज्जल लीनें, दीनें पुंज सुहाई।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई ॥ राग० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

पारिजातमंदार सुमन, संतानजनित महकाई।
मार सुभट मदभंजनकारन, जजहुं तुम्हें शिरनाई ॥ राग०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

फेनी गोझा मोदनमोदक, आदिक सद्य उपाई।
सो लै छुधा निवारन कारन, जजाहुं चरन लवलाई॥ राग० ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥
तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई।
तासु नाशकारनको दीपक, अद्भुतजोति जगाई॥ राग० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥६॥
अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि सुगंध बनाई।
अष्टकरम जारनको तुमढिग, खेवतु हौं जिनराई॥ राग० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥
श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई।
मोखमहाफलदाय जानिकै, पूजौं मन हरखाई॥ राग० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥
जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजौं भगति बढ़ाई।

शिवपदराज हेत हे श्रीधर शरन गही मैं आई ॥ राग० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

## पंचकल्याणक ।

लक्ष्मीधरा छन्द ( १२ वर्ण ) ।

चैतकी शुद्ध एकैं भली राजई । गर्भकल्यान कल्यानकौं साजई ॥
कुंभराजा प्रजापति माता तने । देवदेवी जजे शीस नाये घने ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदा गर्भागममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई । जन्मकल्यानको द्यौस सो छाजई ॥
इंद्र नागेंद्र पूजें गिरेंद्रे जिन्हें । मैं जजौं ध्यायकें शीस नावौं तिन्हें ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

मार्गशीर्षेसुदीग्यारसीके दिना । राजको त्याज दीच्छा धरी है जिना ॥
दान गोछीरको नंदसेनें दयौ । मैं जजौं जासुके पंचचर्जे भयौ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपमंगलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

पौषकी श्यामदूती हने घातिया। केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मीलिया ॥
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं। मैं जजौं चर्न ज्यों कर्मचक्री टरैं ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

फाल्गुन सेत पांचैं अघाती हते सिद्ध आलै बसे जाय सम्मेदतें ॥
इंद्रनागेंद्र कीन्हीं क्रिया आयकें। मैं जजौं सो महा ध्यायकें गायकें ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

## जयमाला।

घत्तानंद छंद ( ३१ मात्रा )।

तुअ नमित सुरेशा, नरनागेशा, रजतनगेशा, भगति भरा।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिवरमनिवरा ॥१॥

पद्धरि छन्द ( मात्रा १६ लघ्वन्त )।

जय शुद्ध चिदातम देव एव। निरदोष सुगुन यह सहज टेव ॥ जय भ्रमतमभंजन।

मारतंड। भविभवदधितारनको तरंड ॥ २ ॥ जय गरभजनममंडित जिनेश। जय छायक समकित वुद्ध भेस ॥ चौथै किय सातो प्रकृति छीन। चौ अनंतानु मिथ्यात तीन ॥ ३ ॥ सातॅय किय तीनो आयु नाश। फिर नवें अंश नवमे विलास ॥ तिनमाहिं प्रकृति छत्तीस चूर। याभांति कियौ तुम ज्ञानपूर ॥ ४ ॥ पहिले महॅ सोलह कहॅ प्रजाल। निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ॥ हनि थानगृद्धिको सकल कुव्व। नर तिर्यग्गति गत्यानुपुव्व ॥ ५ ॥ इक वे ते चौ इंद्रीय जात। थावर आतप उद्योत घात ॥ सूच्छम साधारन एम चूर। पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर ॥ ६ ॥ चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार। तीजे सु नपुंसकवेद टार ॥ चौथे तियवेद विनाश कीन। पांचै हास्यादिक छहो छीन ॥ ७ ॥ नरवेद छठें छय नियत धीर। सातय संज्वलन क्रोधचीर ॥ आठवें संज्चलन मानभान। नवमे माया संज्पलन हान ॥ ८ ॥ इमि घात नवें दशमें पधार। संज्वलनलोभ तित हू विदार ॥ पुनि द्वादशके द्वयअंशमाहिं। सोरह चकचूर कियो जिनाहिं ॥ ९ ॥ निद्रा प्रचला इक भागमाहिं। दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं ॥ ज्ञानावरनी पन दरश चार। अरि अंतराय पांचों प्रहार ॥ १० ॥ इमि छय त्रेशठ केवल उपाय। धरमोपदेश दीन्हो जिनाय ॥ नवकेवललब्धि विराजमान। जय तेरमगुनथिति गुन अमान ॥ ११ ॥ गत चौदहमे द्वै भाग तत्र। छव कीन वहत्तर तेरहत्र ॥ वेदनी असाताको विनाश। औदारि विक्रियाहार नाश ॥ १२ ॥ तैजस्यकारमानो मिलाय। तन पंचपंच बंधन विलाय ॥ संघात

पंच घाते महंत । त्रय आंगोपांग सहित भनंत ॥ १३ ॥ संठान संहनन छय छहेव । रसवरन पंच वसु फरस भेव ॥ जुगगंध देवगति सहित पुब्व । पुनि अगुरु लघु उस्वास दुब्व ॥१४॥ परउपघातक सुविहाय नाम । जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम ॥ अपरज थिर अथिर अशुभ-सुमेव । दुरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव ॥ १५ ॥ अन आदर और अजस्य कित्त । निरमान नीच गोतौ विचित्त ॥ ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय । तव दूजेमें तेरह नशाय ॥ १६ ॥ पहले साता-वेदनी जाय । नरआयु मनुपगतिको नशाय ॥ मानुपगत्यानु सु पूरवीय । पंचेंद्रिय जात प्रकृति विधीय ॥ १७ ॥ त्रसबादर परजापति सुभाग । आदरजुत उत्तम गोतपाग ॥ जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त । ए तेरह छय करि भये मुक्त ॥ १८ ॥ जय गुन अनंत अविकार धार । वरनत गनधर नहिं लहत पार ॥ सम्मेदशैल सुरपति नमंत । तव मुकतथान अनुपम लसंत ॥ वृंदावन वंदत प्रीतलाय । मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय ॥ २० ॥

घत्तानंद ।

जय जय जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी, मल्लि विमलकल्यानकरा ॥
भवदंदविदारन आनंदकारन, भविकुमोदनिशिईश वरा ॥ २१॥

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शिखरिणी ।

जजे हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों ।
करें नानाभांती भगति थुति औ नौति सुधिसों ॥
लहैं शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको ।
तथा मोक्ष जावें जजत जन जो मल्लिजिनको ॥ २२ ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीमुनिसुव्रतनाथपूजा ।

मत्तगयन्द ।

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई ।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुनवान महापदमा जसु माई ॥
बीस धनू तनु श्याम छबी, कछ अंक हरी वर वंश बताई ।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कह, थापतु हौं इत प्रीति लगाई ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिन ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ॥

## अष्टक

गीतिका—उज्जल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारीमें भरों।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करों ॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनँदभरन तारन, तरन विरद विशाल हैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भवतापघायक शाँतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों।
गुनगाय शीस नमाय पूजन, विघनताप सबैं हरों ॥ शिव०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तंदुल अखंडित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरों।

पद अखयदायक मुकतिनायक, जानि पद पूजा करों ॥ शि० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों ।

जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करों ॥ शि० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरों ।

सो लेय तुम पदतर धरत ही, छुधा डाइनको हरों ॥ शि० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुद्रारोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावनघृत भरों ।

सो तिमिरमोनविनाश आतमभास कारन ज्वै धरों ॥शि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

करपूर चंदन चूरभूर, सुगंध पावकमें धरों ।

तसु जरत जरत समस्त पातक सार निजसुखकों भरों ॥शि०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीफल अनार सु आम आदिक पक्कफल अति विस्तरों ।
सो मोक्ष फलके हेतु लेकर, तुम चरनआगें धरों ॥शि०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलगंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों बरों ।
पूजौं चरनरज भगतिजुग, जातें जगत सागर तरों ॥शि०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

## पंचकल्याणक ।

तोटक ।

तिथि दोयज सावन श्याम भयो । गरभागममंगल मोद थयो ॥
हरिवृंद सची पितुमातु जजे । हम पूजत ज्यौं अघओघ भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

वयसाख वदी दशमी वरनी । जनमें तिहिं द्यौस त्रिलोकधनी ॥

सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दरने । मुनिसुव्रतनाथ हमें सरने ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो । वसयाखवदी दशमी कहियो ॥

निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं । हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपङ्गलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

वरकेवलज्ञान उद्योत किया । नवमी वयसाखवदी सुखिया ॥

धनि मोहनिशाभनि मोखमगा । हम पूजि चहैं भवसिन्धु थगा ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥नि०॥

वदि वारस फागुन मोच्छ गये । तिहुँ लोक शिरोमनि सिद्ध भये ।

सु अनंत गुनाकर विघ्न हरी । हम पूजत हैं मनमोद भरी ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

## जयमाला ।

दोहा—मुनिगननायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकरयुक्त ।

भुक्तमुक्त दातार लखि, वंदों तनमन उक्त ॥ १ ॥

तोटक।

जय केवलभान अमान धरं । मुनिस्वच्छसरोजविकासकरं ॥ भवसंकट भंजन लायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ २ ॥ घनघातव नंदवदीप्त भनं । भविबोधत्रषातुरमेघघनं ॥ नित मंगलवृंद वधायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ३ ॥ गरभादिक मंगलसार धरे । जगजीवनके दुखदंद हरे ॥ सब तत्वप्रकाशन वायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥४॥ शिवमारगमंडन तत्वकह्यो । गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो ॥ रुज रागरु दोष मिटायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ५ ॥ समवस्रनमें सुरनार सही । गुनगावत नावत भालमही अरु नाचत भक्ति बढाय कहैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥६॥ पगनूपुरकी धुनि होत भनं । झननं झननं झननं झननं ॥ सुरलेत अनेक रमायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ७ ॥ घननं घननं घन घंट बजें । तननं तननं तनतान सजें ॥ द्रिमद्रो मिरदंग बजायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ८ ॥ छिनमे लघु औ छिन थूल वनें । जुत हावविभाव विलासपने ॥ मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ९ ॥ धृगता धृगता पगपावत हैं सननं सननं सुनचावत हैं ॥ अति आनंदको पुनि पायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१०॥ अपने भवको फल लेत सही । शुभ भावनितें सब पाप दही ॥ नित ते सुखको सब पायक

हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥११॥ इन आदि समाज अनेक तहां। कहि कौन सकै जु विभेद यहां ॥ धन श्रीजिनचंद सुधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१२॥ पुनि देश-विहार कियौ जिनने। वृष अम्रतवृष्टि कियो तुमने ॥ हमको तुमरी शरनायक है। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ १३ ॥ हम पै करुना करि देव अवैं। शिवराज समाज सुदेहु सवैं ॥ जिमि होहुं सुखाश्रमनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१४॥

भवि बृन्दतनी विनती जु यही। मुझ देहु अभैपद राज सही ॥
हम आनि गही शरनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१५॥

घत्तानंद।

जय गुनगनधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती।
परमानंददायक, दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवंत जती ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामाति स्वाहा ॥

दोहा—श्रीमुनिसुव्रतके चरन, जो पूजै अभिनंद।
सो सुरनर सुख भोगिकें, पावै सुहजानंद ॥१७॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

# श्रीनमिनाथपूजा ।

रोड़क---श्रीनमिनाथजिनेन्द्र नमों विजयारथनंदन ।
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकंदन ॥
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनंदन ।
तिन्हें सु थापों यहां त्रिधाकरिके पदवंदन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

## अष्टक ।

द्रुतविलम्बित ।

सुरनदीजल उज्जल पावनं । कनकभृंग भरों मनभावनं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरिमलै मिलि केशरसों घसों। जगतनाथ भवातपको नसों ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुपगदांबुज प्रीति लगायकें ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गुलकके सम सुंदर तंदुलं। धरत पुंजसु भुंजत संकुलं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपांदबुज प्रीति लगायकैं ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदसम्प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

कमल केतुकी बेलि सुहावनी। समरसूल समस्त नशावनी ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकँ ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शशि सुधासम मोदक मोदनं। प्रबल दुष्ट छुधामद खोदनं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायके ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुद्रोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शुधि घृताश्रित दीपक जोइया । असममोह महातम खोइया ।
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदबुंज प्रीति लगायकें ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अमरजिह्वविषं दशगंधको । दहत दाहत कर्म कबँधको ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलसुपक्व मनोहर पावने । सकल विघ्नसमूह नशावने ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीतिलगायकें ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जलफलादि मिलाय मनोहरं । अरघ धारत ही भय भौ हरं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥ ६ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

गरभागम मंगलचारा । जुग आसिन श्याम उदारा ॥
हरिहर्षि जजे पितुमाता । हम पूजें त्रिभुवन-ताता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं

जनमोत्सव श्याम असाढ़ा । दशमीदिन आनँद बाढ़ा ॥
हरि मंदर पूजे जाई । हम पूजें मनवचकाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़कृष्णादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तप दुद्धर श्रीधरधारा । दशमीकलि षाढ़ उदारा ॥
निज आतमरसभर लायौ । हम पूजत आनंद पायौ ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णदशम्यां तपकल्याणप्राप्ताय श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

सित मगसिरग्यारस चूरे । चवघाति भये गुनपूरे ॥
समवस्रत केवलधारी । तुमकौं नित नौति हमारी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

वयसाख चतुर्दशि श्यामा । हनि शेष वरी शिववामा ॥
सम्मेदथकी भगवंता । हम पूजैं सुगुन अनंता ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं

## जयमाला ।

दोहा---आयु सहस दशवर्षकी, हेमवरन तनसार ॥
धनुष पंचदश तुंग तन, महिमा अपरंपार ॥ १ ॥

जै जै जै नमिनाथ कृपाला । अरिकुलगहनदहनदवज्वाला ॥ जै जै धरमपयोधर धीरा । जय भवभंजन गुनगंभीरा ॥ २ ॥ जै जै परमानंद गुनधारी । विश्वविलोकन जनहित-कारी ॥ अशरनशरन उदार जिनेशा । जै जै समवशरन आवेशा ॥ ३ ॥ जै जै केवलज्ञान

प्रकाशी। जै चतुरानन हनि भवफांसी ॥ जै त्रिभुवनहित उद्यमवंता। जै जै जै जै नमि भगवंता ॥ ४ ॥ जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो। तास सुनत भवि निजरस पायो ॥ एक शुद्ध अनुभवनिज भाखे। दोविधि राग दोष छै आखे ॥ ५ ॥ द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्मं। दों प्रमाण आगमगुन शर्मं ॥ तीनलोक त्रयजोग तिकालं। सल्ल पल्ल त्रय वात वलालं ॥ ६ ॥ चार बंध संज्ञागति ध्यानं। आराधन निछेप चउ दानं ॥ पंचलब्धि आचार प्रमादं। बंधहेतु पैंताले सादं ॥ ७ ॥ गोलक पंचभाव शिव भौने। छहो दरब सम्यक अनुकौनें ॥ हानिवृद्धि तप समय समेता। सप्तभंगवानीके नेता ॥ ८ ॥ संजम समुदघात भय सारा। आठ करम मद सिधगुनधारा ॥ नवों लबधि नवतत्त्व प्रकाशे। नोकषाय हरि तूप हुलाशे ॥ ९ ॥ दशों बन्ध के मूल नशाये। यों इन आदि सकल दरशाये ॥ फेर विहरि जगजन उद्धारे। जै जै ज्ञान दरश अविकारे ॥ १० ॥ जै वीरज जै सूच्छमवंता। जै अवगाहन गुन वरनंता ॥ जै जै अगुरु लघू निरवाधा। इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा ॥ ११ ॥ ताकों कहतथके गनधारी तौ को समरथ कहै प्रचारी ॥ तातें मैं अब शरनें आया। भवदुख मेटि देहु शिवराया ॥१२॥ वार वार यह अरज हमारी। हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ॥ परपरनतिको वेगि मिटावो। सहजानंदसरूपमिटावो ॥ १३ ॥ वृन्दावन जांचत शिरनाई। तुम मम उर निवसौ जिनराई ॥ जबलों शिव नहिं पावों सारा। तबलों यही मनोरथ म्हारा ॥ १४ ॥

घत्तानन्द ।

जयजय नमिनाथं, हौ शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं ।
तातें शिरनायौ, भगति बढ़ायौ, चिह्न चिन्ह शतपत्र पदं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—श्री नमिनाथतनें जुगल, चरन जजें जो जीव ।
सो सुरनरसुख भोगवर, होवैं शिवतिय पीव ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीनेमिनाथपूजा ।

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा ।

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म अवतार दातार श्यौचैनकी ।
श्रीशिवानंद भौफंद निकन्द ध्यावैं, जिन्हैं इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ।
पर्मकल्यानके देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौं ऐनकी ।

थापि हौ वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धताधार भौपारकूं लेनकौ ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

## अष्टक ।

दाता मोच्छके श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० टेक ॥

निगमनदी कुश प्राशुक लीनौं, कंचनभृंग भराय ।

मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय ॥

दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरिचन्दनजुत कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसाय ।

विघनतापनाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय ॥ दाता० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुण्यराशि तुमजस सम उज्जल, तंदुल शुद्ध मँगाय ।

अखय सौख्य भोगनके कारन, पुंज धरौं गुनगाय ॥ दा० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुंडरीकतृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधितलाय ।
दर्प्पकमनमथभंजनकारन जजहुं चरन लवलाय ॥ दा० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे, तुरित मँगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुं चरन उमगाय ॥ दाता० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कनकदीपनवनीत पूरकर, उज्जल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि, जजहुं चरन हुलसाय ॥ दा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दशविध गंध मँगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय ।
दशोंधंध जारनके कारन, खेवों तुमढिग लाय ॥ दा० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सुरसवरन रसनामनभावन, पावन फल सु मँगाय ।

मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुमपाय॥ दाता०॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।

अष्टमछितिके राज करनकों, जजो अंग वसुनाय ॥ दाता॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

## पञ्चकल्याणक ।

सित कातिक छट्ठ अमंदा। गरभागमआनँदकंदा ॥

शचि सेय सिवापद आई । हम पूजतमनवचकाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

सित सावन छट्ठ अमंदा । जनमें त्रिभुवनके चंदा ॥

पितु समुद महासुख पायो । हम पूजत विघन नशायो ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

तजि राजमती व्रतलीनों । सितसावन छट्ठ प्रवीनों ॥

शिवनारि तबै हरषाई । हम पूजैं पद शिरनाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सित आसिन एकम चूरे । चारों घाती अति कूरे ॥
लहि केवल महिमा सारा । हम पूजैं अष्टप्रकारा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सितषाढ़ अष्टमी चूरे । चारों अघातिया कूरे ।
शिव उर्ज्जयंततें पाई । हम पूजैं ध्यान लगाई ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

## जयमाला

दोहा---श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम ।
शंख चिह्नपदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ( १६ मात्रा लघ्वन्त ) ।

जै जै जे नेमि जिनिंद चंद । पितु समुद देन आनंदकंद ॥ शिवमात कुमुदमनमोददाय । भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥ २ ॥ जय देव अपूरव मारतंड । तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड ॥ शिवतियमुखजलजविकाशनेश । नहिं रही सृष्टिमे तम अशेश ॥ ३ ॥ भवि भीत कोक कीनो अशोक । शिवमग दरशायो शर्मथोक ॥ जै जै जै जै तुम गुनगंभीर । तुम आगम

निपुन पुनीत धीर ॥ ४ ॥ तुम केवलजोति विराजमान। जै जै जै जै करुनानिधान ॥ तुम समवसरनमें तत्त्वभेद। दरशागो जातें नशात खेद ॥ ५ ॥ तित तुमको हरि आनंदधार। पूजत भगतीजुत बहु प्रकार ॥ पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय। जै बल अनंत गुनवंतराय ॥६॥ जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश। जय बुद्ध विधाता विश्णुवेष ॥ जय कुमतिमतंगनको मृगेंद्र। जय मदनध्वांतको रवि जिनेन्द्र ॥ ७ ॥ जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध। जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध ॥ जय जगजनमनरंजन महान। जय भवसागरमहं सुष्टु थान ॥ ८ ॥ तुव भगति करै ते धन्य जीव। ते पावैं दिव शिवपद सदीव ॥ तुमरो गुन देव विविधप्रकार। गावत नित किन्नरकी जु नार ॥ ९ ॥ वर भगतिमाहिं लवलीन होय। नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय ॥ तुम करुणासागर सृष्टिपाल। अब मोकों वेगि करो निहाल ॥ १० ॥ मैं दुख अनंत वसुकरमजोग। भोगे सदीव नहिं और रोग ॥ तुमको जगमे जान्यों दयाल। हो वीतराग गुनरतनमाल ॥ ११ ॥ तातें शरना अब गही आय। प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ॥ यह विघन करम मम खंडखंड। मनवांछितकारज मंडमंड ॥ १२ ॥ संसारकष्ट चकचूर चूर। सहजानंद मम उर पूर पूर ॥ निज पर प्रकाशबुधि देह देह। तजिके विलंब सुधि लेह लेह ॥ १२ ॥ हम जांचत हैं यह वार वार। भवसागरतें मो तार तार ॥ नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख। तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख ॥ १४ ॥

घत्तानंद—श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं,।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मालिनी---सुख, धन, जस, सिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि । सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि रिद्धि ॥ जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी । अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोच्छनारी ॥१६॥ इत्याशीर्वादः ।

# श्रीपार्श्वनाथपूजा ।

प्रानतदेवलोकतें आये, वामादे उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुतनुत हरिहर हरि, अंक हरितलन सुखदातार ॥
जरतनाग जुगबोधि दियो जिहिं, भुवनेसुरपद परमउदार ।
ऐसे पारसको तजि आरस, थापि सुधारस हेत विचार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक ।

सुरदीरघिकाकनकुंभ भरों । तव पादपद्मतर धार करों ॥

सुखदाय पाय यह सेवत हौं । प्रभुपार्श्व सार्श्वगुन बेवत हौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरिगंध कुंकुम कपूर घसौं । हरिचिह्न हेरि अरचौं सुरसौं ॥ सु० ॥२॥

ॐ ह्रीं भवतापविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हिमहीरनीरजसमानशुचं । वरपुंज तंदुल तवाग्र मुचं ॥ सु० ॥३॥

ॐ ह्रीं अक्षयपदप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

कमलादिपुष्प धनुपुष्प धरी । मदभंजहेत ढिग पुंज करी ॥सु०॥४॥

ॐ ह्रीं कामवाणविध्वंसनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चरु नव्यगव्य रससार करों । धरि पादपद्मतर मोद भरों ॥सु०॥५॥

ॐ ह्रीं क्षुद्रोगनिवारणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मनिदीपजोत जगमग्ग मई । ढिगधारतें स्वपरबोध ठई ॥सु०॥६॥

ॐ ह्रीं मोहान्धकारविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दशगंध खेय मन माचत है । वह धूमधूमसिसि नाचत है ॥सु०॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मदहनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलपक्व शुद्ध रसजुक्त लिया । पदकंज पूजत हौं खोलि हिया ॥सु०॥

ॐ ह्रीं मोक्षफलप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जलआदि साजि सब द्रव्य लिया । कनथार धार नुतनृत्य किया ॥सु०

ॐ ह्रीं अनर्घ्यपदप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

## पञ्चकल्याणक ।

पक्ष वैशाखकी श्याम दूजी भनों । गर्भकल्यानको द्यौस सोही गनों ॥
देवदेवेन्द्र श्रीमातु सेवै सदा । मैं जजों नित्य ज्यों विघ्न होवै बिदा ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भागममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पोषकी श्याम एकादशीकोंस्व जी । जन्म लीनों जगन्नाथ धर्म ध्वजी ॥
नाक नागेन्द्र नागेन्द्र पैं पूजिया । मैं जजों ध्यायकें भक्त धारोंहिया ॥

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि०

कृष्णएकादशी पोषकी पावनी । राजकों त्याग वैराग धार्‌यो वनी ॥
ध्यानचिद्रूपको ध्याय साता मई । आपको मैं जजों भक्ति भावै लई ॥

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

चैतकी चौथि श्यामा महाभावनी । तादिना घातिया घाति शोभावनी ॥

बाह्य आभ्यन्तरैं छन्द लक्ष्मीधरा। जैति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सप्तमीशुद्ध शोभै महासावनी। तादिना मोच्छपायो महापावनी ॥
शैलसम्मेदतैं सिद्धराजा भये। आपकों पूजतैं सिद्धकाजा ठये ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

## जयमाला।

दोहा—पाशपर्म गुनराश है, पाशकर्म हरतार।
पाशशर्म निजवास द्यो, पाशधर्म धरतार ॥ १ ॥
नगरबनारसि जन्मलिय, वंश इक्ष्वाक महान।
आयु वरष शततुंग तन, हस्त सुनौ परमान ॥ २ ॥

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश। तुव गुन गन फणिगावत अशेश ॥ जय जय जय आनँद-कंद चंद। जय जय भविपंकजको दिनंद ॥३॥ जय जय शिवतियवल्लभ महेश। जय ब्रह्मा शिवशंकर गनेश ॥ जय स्वच्छचिदंग अनंगजीत। तुव ध्यावत मुनिगन सुहृदमीत ॥ ४ ॥ जय गरभागममंडित महंत। जगजनमनमोदन परम संत ॥ जय जनममहोच्छव सुखदधार।

भविसारंगको जलधर उदार ॥ ५ ॥ हरिगिरिवरपर अभिषेक कीन । झट तांडव निरत अरंभदीन ॥ बाजन बाजत अनहद अपार । को पार लहत बरनत अवार ॥६॥ द्रुमद्रुम द्रुमद्रुम द्रुम द्रुम मृदंग । घघनन नननन घंटा अभंग ॥ छमछम छमछम छम छुद्रघंट । टमटम टमटम टंकोर तंट ॥ ७ ॥ झननन झननन नूपुर झकोर । तननन तननन नन तानशोर ॥ सननन नननन गगनमाहिं । फिरिफिरिफिरिफिरिफिरिकी लहांहिं ॥ ताथेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव । चटपट अटपट झट त्रिदशराव ॥ करिकें सहस्र करको पसार । बहुभांति दिखावत भाव प्यार ॥८॥ निजभगति प्रगट जित करत इंद्र । ताकों क्या कहिं सक्कि हैं कविंद्र ॥ जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म । अरु सभा ईश तुम देव शर्म ॥१०॥ अरु नाचत मघवा भगतिरूप । बाजे किन्नर बज्जत अनूप ॥ सो देखत ही छवि बनत वृंद । मुखसो कैसे बरनै अमंद ॥११॥ धनघड़ी सोय धन देव आप । धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप ॥ हम तुमको देखत नयनद्वार । मनु आज भये भव-सिंधु पार ॥१२॥ पुनिपिता सौंपि हरि स्वर्गजाय । तुम सुखसमाज भोग्यो जिनाय ॥ फिर तपधरि केवल ज्ञानपाय । धरमोपदेश दै शिवसिधाय ॥१३॥ हम सरनागत आये अबार । हे कृपासिंधु गुन अमलधार ॥ मो मनमें तिष्ठहु सदाकाल । जबलों न लहों शिवपुर रसाल ॥१४॥ निरवान थान सम्मेद जाय । "वृंदावन" वंदत शीसनाय ॥ तुम ही हो सब दुखदंद हर्न । तातें पकरी यह चर्नशर्न ॥१५॥

जयजय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर, पार्श्वपती ॥
वृन्दावन ध्यावत, पूजरचावत, शिवथलपावत, शर्म अति ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

कवित्त—पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्रसमान ।
सुखसागरवर्द्धनको शशिसम, दँवकषायको मेघमहान ॥
तिनको पूजै जो भविज्ञानी, पाठ पढ़ै अति आनँद आन ।
सो पावै मनवांछित सुख सब, और लहै अनुक्रमनिरवान ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीवर्द्धमानजिनपूजा ।

मत्तगयंद—श्रीमतवीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरिपंकतिमौलि सुआई ॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरखाई ।
हे करुणाधनधाकर देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ २ ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

## अष्टक।

छंद गणपदी ( द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागोंमें भी बने हैं )।

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों॥
श्रीवीरमहा अतिवीर सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरचंदनसार, केसरसंग घसा।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसा॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०॥ २॥

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी॥ श्री०॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०॥ ३॥

सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमनप्यारे।

सो मनमथभंजनहेत, पूजों पद थारे श्री० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।

पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों ॥

तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ॥ श्री० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा ।

तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥ श्री० ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरा ।

शिव फलहित हे जिनराय, तुमढिग भेट धरा श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८॥

जलफल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों ।
गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥ श्री० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

पंचकल्याणक ।

मोहि राखो हो, सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो० ॥
गरभ साढ़सित छट्ट लियो थिति, त्रिशला उर अघहरना ।
सुर सुरपति तित सेव करयो नित, मैं पूजों भवतरना । मोहिरा० ॥
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ॥
जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना ।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ॥ मोहिरा० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०
मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृप कुमारघर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ॥ मोहिरा० ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुकलदशैं वैशाखदिवस अरि, घात चतुक छयकरना ।
केवललहि भवि भवसरतारे, जजों चरन सुख भरना ॥ मो० ॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

कातिक श्याम अमावस शिवत्रिय, पावापुरतें परना ।
गनफनिबृंद जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना ॥ मो० ॥५॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

## जयमाला ।

छंद हरिगीता २८ मात्रा ।

गनधर असनिधर, चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा । अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ॥ दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं । सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल हैं ॥ १ ॥

घत्तानन्द––जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदं, चंदवरं ।
भवतापनिकंदन तनकनमंदन, हरितसपंदन, नयन धरं ॥ २ ॥

छंद तोटक । जय केवलभानुकलासदनं । भवि कोकविकाशनकंदवनं ॥ जगजीत महारिपु मोहहरं । रजज्ञानदृगा बर चूरकरं ॥ १ ॥ गर्भादिकमंगलमण्डित हो ॥ जगमाहिं तुमी सत

पंडित हो। तुम ही भवभावविहंडित हो ॥ २ ॥ हरिवंशसरोजनमो रवि हो। बलवंत महंत तुम ही कवि हो ॥ लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ। अवलों सोई मारगराजति यौ ॥ ३ ॥ पुनि आप तने गुनमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही ॥- तिनकी वनिता गुन गावत हैं। लय माननिसों मनभावत हैं ॥४॥ पुनि नाचत रंग उमंग भरी। तुअ भक्तिविषै पग येम धरी ॥ झननं झननं झननं छननं। सुरलेत तहाँ तननं तननं ॥५॥ घननं घननं घनघंट बजै। द्रुमद्रं द्रुमद्रं मिरदंग सजै ॥ गगनांगनगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता ॥६॥ धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रसाल जु छाजत है ॥ सननं सननं सननं नभमैं। इकरूप अनेक जु धारि भमैं ॥ ७ ॥ कइ नारि सु वीन वजावति हैं। तुमरो जस उज्जल गावति हैं ॥ करतालविषै करताल धरें। सुरताल विशाल जु नाद करें ॥ ८ ॥ इन आदि अनेक उछाहभरी। सुरिभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ॥ तुमही सब विघ्नविनाशन हो। तुमही निज आनंद भासन हो ॥ तुमही चितचिंतितदायक हौ। जगमाहिं तुमी सब लायक हौ ॥ तुमरे पनमङ्गलमाहिं सही। जिय उत्तम पुन्नलियो सब ही ॥ हमको तुमरी सरनागत है। तुमरे गुनमे मन पागत है ॥ ११ ॥ प्रभु मोहिय आप सदा बसिये। जबलो वसुकर्म नहीं नसिये ॥ तबलो तुम ध्यान हिये वरतो। तबलो श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥ २२ ॥ तबलो तव चारित चाहतु हों। तबलो शुभ भाव सुगाहतु हों ॥ तबलों सतसंगति नित्त रहौ। तबलों मम संजम चित्त गहौ ॥ १३ ॥ जबलों नहीं नाश करो अरिकों। शिवनारि वरों समता धरिको ॥ यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥ १४ ॥

घत्तानन्द । श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा ।
'वृंदावन' ध्यावै विघननशावै, वांछित पावै शर्म वरा ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—श्रीसनभतिके जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुरनर, लहै मुक्तिनवनीत ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

# श्रीसमुच्चयअर्घ ।

तोटक—सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी तुममें जितने गुन हैं तितनी ॥
कहि कौन सकै मुखसों सब ही । तिहिं पूजतु हौं गहि अर्घ यही ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामी स्वाहा ॥

कवित्त । रिखवदेवकों आदिअंत, श्रीवरधमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरनकमलको पूजै, जो प्रानी गुनमाल उच्चार ॥
ताके पुत्रमित्र धन जोवन, सुखसमाजगुन मिलै अपार ।

सुरपदभोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रमलहै मोच्छपद सार ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः ।

# कविनामग्रामादिपरिचय ।

मनहरन । काशीजीमें काशीनाथ नन्हूंजी, अनंतराम, मूलचंद, आढतसुराम आदि जानियौ । सज्जन अनेक तहां धर्मचंदजीको नंद, वृंदावन अग्रवाल गोल गोती बानियौ ॥ तांनें रचे पाठ पाय मन्ना-लालको सहाय, बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियौ । यामें भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो, मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उरआनियौ

॥ इति श्रीकविवरवृन्दावनकृत श्रीवर्तमानजिनचतुर्विंशति जिनपूजा समाप्त ॥

संवत् अठारहसौ पचहत्तर १८७५ कार्तिककृष्ण अमावस्या गुरुवारको यह पुस्तक पूर्ण भया । लिखितं वृन्दावनेन निजपरोपकारार्थम् ।

श्रेयमस्तु । मंगलमस्तु । शुभम्भूयात् ।